ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

पं. लेखराम

शुद्धि समाचार

पं. मदनमोहन मालवीय

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक

वर्ष 36 अंक 12

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

दिसम्बर, 2013 विक्रम सम्वत् 2070 मार्गशीर्ष-पौष

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23847244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या इसलिए की गई कि शुद्धि कार्य समाप्त हो जाये। स्वामी जी की हत्या का बदला, शुद्धि कार्य जारी रख कर ही लिया जा सकता है।
–सावरकर विचार दर्शन पृ. 14

बिस्मिल

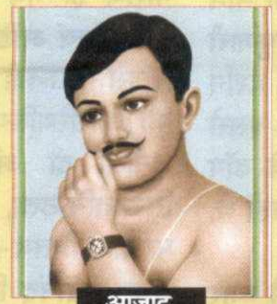
आजाद

सावरकर

नेताजी

भगत सिंह

भाई परमानन्द

श्यामजी कृष्ण वर्मा

राजेन्द्र नाथ

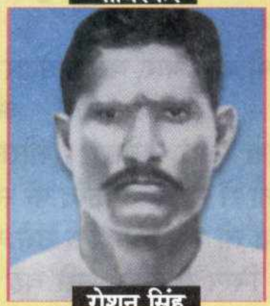
रोशन सिंह

लाला हरदयाल

गोखले

सुखदेव

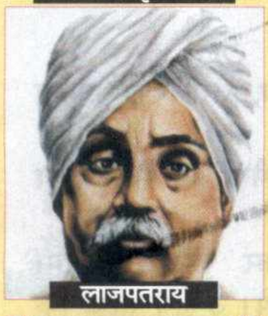
लाजपतराय

नाना साहब पेशवा

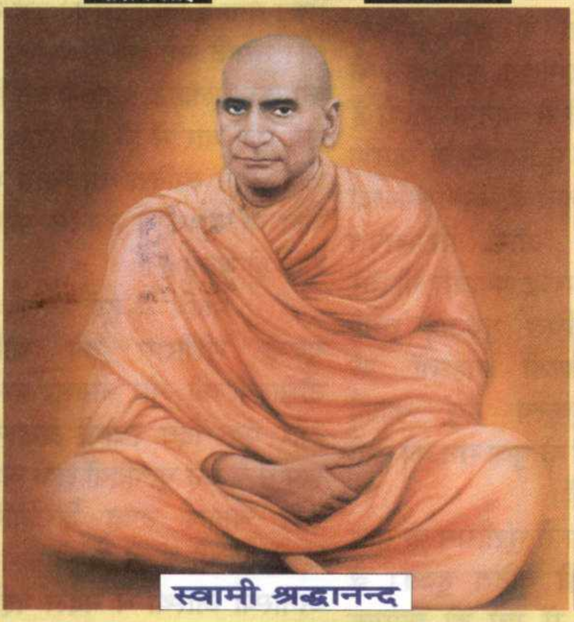
स्वामी श्रद्धानन्द

खुदीराम बोस

गणेश शंकर

मदनलाल ढींगरा

मंगल पाण्डे

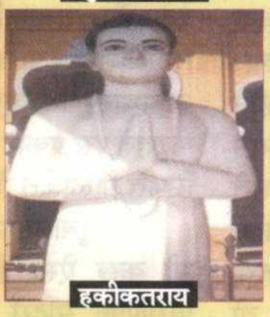
हकीकतराय

फतेह सिंह – जोरावर सिंह

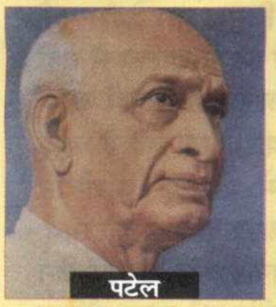
पटेल

लक्ष्मीबाई

दुर्गा भाभी

तिलक

अशफाक उल्ला खां

उधमसिंह

राष्ट्रीय प्रार्थना : ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽ ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।

किस भाँति जीना चाहिए, किस भाँति मरना चाहिए, सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिए। पद-चिह्न उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिए, निज पूर्व-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिए ॥10॥

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद

– चौधरी राजवीर सिंह छिकारा
चौधरी सुखबीर सिंह दलाल

वीरप्रसविनी, रत्नगर्भा, भारतभूमि की कोख से आदिकाल से ही ऐसे विलक्षण एवं जाज्वल्यमान व्यक्तित्व के धनी महापुरुष पैदा होते रहे हैं, जिन्होंने अपने उज्ज्वल हस्ताक्षरों की अमिट छाप विश्व इतिहास के पन्नों पर छोड़ी है तथा जिनके आदर्श चरित्र आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं।

महापुरुषों की इस अनुपम आभायुक्त विशाल आकाश गंगा के देदीप्यमान नक्षत्र हैं हमारे चरित-नायक स्वामी श्रद्धानंद, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में जन्म लिया और बीसवीं सदी के प्रथम तीन दशकों की कालावधि में क्या धर्म, क्या शिक्षा, क्या राजनीति और क्या समाज, हर क्षेत्र में जिनकी तूली बोलती रही और इस ओजस्वी एवं दबंग संन्यासी के सामने दूसरे नेता लगभग बौने प्रतीत होते रहे। मुंशीराम, महात्मा मुशीराम और फिर स्वामी श्रद्धानंद के नाम से विख्यात इस महापुरुष के जीवन का सिलसिलेवार परिचय प्राप्त करना हम सबके लिए बहुत ही आवश्यक है।

आपका जन्म संयुक्त पंजाब के जालंधर जिलान्तर्गत एक छोटे से गाँव तलवन में विक्रमी संवत् 1914 अर्थात् ई. सन् 1857 में हुआ था। आपका बचपन का नाम 'बृहस्पति' था। मुंशीराम कुल छह भाई-बहनों (चार भाई, दो बहनों) में सबसे छोटे थे, इसलिये परिवार में सर्वाधिक लाड-प्यार आदि भी इनको ही मिला। पुलिसिया रौब और लाड़ला बेटा होने का कुपरिणाम यह हुआ कि मुंशीराम बिगाड़ और शोहदेपन के गलत रास्ते पर चल निकला और युवावस्था में काफी समय तक कुसंग तथा दुर्व्यसनों की गिरफ्त में रहा। यूँ तो बालक मुंशीराम अत्यंत कुशाग्र बुद्धि एवं होनहार था किन्तु पिताजी का तबादला एक से दूसरे स्थान पर होता रहता था इस कारण से मुंशीराम की पढ़ाई बीच-बीच में बाधित होती रही तथा व्यवस्थित अथवा नियमित नहीं चल पाई। वे अपनी वकालत की पढ़ाई बहुत देर से पूरी कर पाये। लेकिन एक बार वकीली पेशा अपना लेने के बाद वे शीघ्र ही नामीगिरामी फौजदारी वकीलों में गिने जाने लगे। इसी दौरान इनका विवाह भी एक अत्यंत शांत स्वभाव एवं धार्मिक संस्कारों से युक्त आदर्श आर्य महिला शिवदेवी से हो गया। जैसे कि कहावत है कि हर महान् पुरुष के पीछे माँ, बहन, पत्नी सहायिका रूप में कोई-न-कोई नारी अवश्य होती है। पथभ्रष्ट मुंशीराम को जहाँ महर्षि दयानंद के उपदेश ने कल्याण मार्ग का पथिक बनाया वहीं उनको महात्मा मुंशीराम और तदनन्तर स्वामी श्रद्धानंद बनाने में शिवदेवी का योगदान भी कोई कम नहीं था। सन् 1891 में शिवदेवी का देहांत हो गया। इन्होंने दो पुत्र और दो पुत्रियों को जन्म दिया- वेद कुमारी, हरिश्चंद्र, हेम कुमारी और इन्द्र। इन्द्र विद्यावाचस्पति स्वतंत्र भारत की संसद के सांसद (एम. पी.) रहे। उन्हें हिन्दी साहित्य में सिद्धहस्त लेखकों में गिना जाता है।

तलाश सत्य की, सच्चे धर्म की, परमेश्वर की

प्रायः देखने में आता है जिनको सत्य के जानने की उत्कट इच्छा होती है, जो अत्यंत मेधावी एवं प्रतिभासंपन्न होते हैं तथा जीवन, जगत्, आत्मा-परमात्मा, धर्म, कर्म के मर्म को ईमानदारी से जानना चाहते हैं वे सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण कई बार भटक जाते हैं, अनास्थावादी बन जाते हैं और परंपरागत जीवनमूल्यों के विरुद्ध बगावत भी कर देते हैं। तथाकथित गुरुओं, ढोंगी मठाधीशों, पाखण्डी महन्तों के अनाचारपूर्ण कुकृत्य एवं काली करतूतें इस प्रकार के युवा मन को ऐसी स्थिति में ला देते हैं।

युवावस्था में मुंशीराम के साथ भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ। वे पौराणिक मंदिरों में गये तो कामुक पुजारियों की काम-क्रीड़ाएँ देखकर बड़े दुःखी और निराश होकर लौटे। चर्च में पादरियों का उच्छृंखल यौनाचार देखा तो ईसाईयत से सदा-सदा के लिये विमुख हो गये। विंध्यवासिनी देवी के मेले में तथाकथित देवीभक्तों की वाममार्गी काम-क्रीड़ाओं ने मुंशीराम के युवा मन को इस थोथे कर्मकांड के प्रति विद्रोहाग्नि से भर दिया। उन्हें यह देखकर घोर दुःख हुआ कि भगवान् के घर में भी बेहद पक्षपात है, अमीर-गरीब का फर्क है क्योंकि उन्होंने अपनी आँखों से यह नजारा देखा था कि काशी के विश्वनाथ का दर्शन रीवां की महारानी तो जब चाहे तब कर सकती है लेकिन एक दीन-हीन श्रद्धालुभक्त घंटों पंक्ति में खड़ा होकर प्रतीक्षा करता रहे फिर भी जरुरी नहीं कि धन के गुलाम, भगवान के बिचौलिये, धर्म के नाम पर दलाली करने वाले पण्डे, पुजारी उस बेचारे को भगवान् के दर्शन करने की इजाजत दे देंगे। इससे मुंशीराम बहुत खिन्न हुये। वे ढोंग और दोगलेपन के हिमायती नहीं थे, उनका तो सिद्धांत था-

खुदा की बंदगी या कि बुतों से प्यार कर।
जो भी काम कर, बस पायेदार कर।।

इसलिये चारों ओर से निराश और हताश मुंशीराम जब बरेली में महर्षि दयानंद के संपर्क में आया तो उसे लगा कि उसे मर्ज की दवा मिल गयी है। उसे वह रहनुमा मिल गया है कि जिसकी उसे तलाश थी। उसके मन की चंचलता, प्रश्नों की कुलबुलाहट, आत्मा की पिपासा सब एक बार में ही ऐसे शांत हो गई जैसे प्यासे व्यक्ति की प्यास शीतल जल के सेवन से आनन-फानन में शांत हो जाती है।

महर्षि से हुई उक्त भेंट ने युवक मुंशीराम को चारित्रिक ऊँचाइयों की ओर अग्रसर कर दिया और एक दिन स्वामी श्रद्धानंद के रूप में वे उन बुलंदियों तक जा पहुँचे जहाँ जाकर उच्च हिमगिरि की 'एवरेस्ट' भी नीची लगने लगती है। अनास्था आस्था में बदल गई, सत्य को पा सकने का आत्मविश्वास मन में पैदा हुआ तथा ईश्वरसंबंधी सब भ्रांतियाँ दूर हो गईं।

कार्यक्षेत्र में प्रवेश, क्रांतिकारी कदम

महर्षि दयानंद का निर्वाण संवत् 2040 (सन् 1883 ई.) में दीपावली के दिन हुआ। महर्षि के व्यक्तित्व तथा कृतित्व से प्रभावित होकर जो लोग वैदिक धर्म के अनुयायी बने थे, उनमें चार ऐसे नाम विशेष उल्लेखनीय हैं जो ऋषि के निर्वाण के तुरन्त पश्चात् आँधी बनकर कार्यक्षेत्र में आये और मृत्यु-पर्यन्त तूफान बनकर कार्यरत रहे। वे ढोंग, रूढ़ियों, पोंगापंथी, गुरुडम, अंधविश्वास और सभी तरह की दासता को तहस-नहस कर गये। प्रथम पीढ़ी के हमारे चार आर्यनेता थे- पं. गुरुदत्त, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानंद। महात्मा मुंशीराम ने क्रांति घर से आरंभ की। अपनी बड़ी बेटी वेदकुमारी का विवाह जातिगत बंधन तोड़कर किया। इस क्रांतिकारी कदम से अत्यंत नजदीकी, प्रिय रिश्तेदार भी नाराज हो गये लेकिन सिद्धांतों पर अटल एवं अडिग रहने वाले मुंशीराम ने इस नाराजगी की कोई परवाह नहीं की। परिस्थितियों ने जब-जब उनको चुनौती दी और उनके ऋषिप्रेम, सिद्धांतनिष्ठता, धैर्य, वीरतादि की परीक्षा ली तब-तब परिस्थितियाँ हारीं तथा श्रद्धानंद विजयी हुये। यं सच्चे कर्मयोगी थे। वे 'कथनी' में नहीं 'करनी' में विश्वास रखते थे। अपने सिद्धांतों को क्रियात्मक रूप देने में उन्होंने न कभी विलम्ब किया न कोई बहाना बनाया और न ही कभी झिझक दिखाई। जब बिटिया वेदकुमारी ने विद्यालय में सिखाया हुआ यह भजन सुनाया-

"ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम-रमैया, ईसा मेरा-कृष्ण कन्हैया।।"

तो इसे सुनकर पिता मुंशीराम भौंचक्के रह गये। उन्होंने सोचा कि जब मुझ जैसे वेदानुयायी आर्य के घर में 'ईसा' ने घुसपैठ कर ली है तो आम हिन्दू आर्य का घर सुरक्षित कैसे रह सकता है। बालक, बालिकाओं के माध्यम से ईसाईयत हमारे घरों के अन्दर तक घुस जायेगी तथा हमें वेद, रामायण, गीता, राम, कृष्ण, गाय, गायत्री आदि से विमुख कर देगी। पुत्री से कहा, कल से इस विद्यालय में नहीं जाना है। पुत्री का समझ में नहीं आया कि क्या भूल या गलती हुई है। वह अपने विचारों में खो गई। मुंशीराम बाहर निकले, लाला देवराज को साथ, लिया, योजना बनाई और दो चार दिन के बाद ही जालंधर की प्रथम वैदिक पाठसाला 'सोहनलाल आर्य कन्या विद्यालय' की स्थापना हो गई जो, आज जालंधर नगर का भरा पूरा,

सुविकसित, विख्यात कन्या महाविद्यालय है।

महात्मा मुंशीराम ने आर्ष विचारधारा के प्रचार-प्रसार हेतु सन् 1887 में 'सद्धर्म प्रचारक' का प्रकाशन प्रारंभ किया था। यूँ तो 'सद्धर्म प्रचारक' की भाषा उर्दू थी लेकिन उसमें हिन्दी, संस्कृत की शब्दावली की प्रमुखता रहती थी। किंतु महात्मा मुंशीराम को लगा कि यही ठीक नहीं है कि एक हिन्दी भक्त व्यक्ति की पत्रिका का माध्यम उर्दू हो। तुरंत निर्णय कर लिया कि अगला 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू में नहीं, देवनागरी लिपि में हिन्दी में निकलेगा। शुभचिंतकों ने सलाह दी कि जल्दबाजी में यह कदम मत उठाओ। पाठकों की संख्या घट जायेगी, आर्थिक नुकसान होगा और तुम दौड़ में पिछड़ जाओगे। मुंशीराम का एक की जवाब था, सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करूँगा, जो भी परिणाम सामने आयेंगे सहर्ष झेलूँगा क्योंकि धर्म का प्रचार करना व्यवसाय नहीं है, हमारा दायित्व है। और लागों ने आश्चर्य सहित देखा कि हिन्दी का 'सद्धर्म' उर्दू वाले से कहीं ज्यादा लोकप्रिय हुआ।

गुरुकुल काँगड़ी की स्थापनाः शिक्षाजगत् की अनुपम, अपूर्व घटना

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धिया विप्रोऽजायत।

अर्थात् पहाड़ों की सुरम्य तलहटी में, नदियों के मिलनस्थल के पास के मनोरम वातावरण में मेधावी विद्वान् पैदा होते हैं। और यही मन्त्र गुरुकुल काँगड़ी का जन्मदाता मंत्र बन गया। गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना स्वामी जी (मुंशीराम) ने सन् 1902 में की थी और आज यह एक अग्रणी विश्वविद्यालय बन चुका है। इसकी स्थापना से शिक्षाजगत् में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। उपाधियों के भारतीयकरण की शुभ शुरुआत गुरुकुल काँगड़ी ने ही की। इससे पहले 'विद्यालंकार', 'वेदालंकार', 'विद्यावारिधि', 'विद्यावाचस्पति' आदि नाम कहीं भी देखने या सुनने को नहीं मिलते थे। जिन पाँच मकारों से स्वामी दयानंद ने न केवल सफलतापूर्वक लोहा लिया था अपितु उनके दांत भी खट्टे कर दिये थे। उन्हीं पाँच 'म-कारों' को दयानंद के सच्चे शिष्य और वीर सैनिक स्वामी श्रद्धानंद ने एक बार फिर ललकारा और उनको मैदान में पछाड़ा भी। वे पाँच (म-कारों) हैं- 1. मैकाले (पाश्चात्य-शिक्षा), 2. मैक्समूलर (वैदिक धर्मविषयक भ्रांतियाँ), 3. मिशनरीज (विधर्मी प्रचारक), 4. मनी पॉवर (प्रलोभन) तथा 5. मिलट्री (जोर-जबरदस्ती/यातनायें) गुरुकुल काँगड़ी के स्नातकों ने इस पाँच आक्रमणों के विरुद्ध जो सफल अभियान चलाया वह इतिहास में अपनी मिसाल आप हैं (उन्होंने गुरुकुल शिक्षा के माध्यम से स्वधर्म, स्वदेशी, स्वभाषा, स्वाभिमान आदि की रक्षा की, स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा दी तथा देश के लिए बलिदान देने की भावना पैदा की। यह सब इसलिए संभव हुआ क्योंकि गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानंद के विलक्षण व्यक्तित्व में उक्त गुण तथा अन्य उदात्त गुण पूरी तरह ओतप्रोत थे। कोई भी संस्था या आंदोलन हमें उसके संस्थापक या प्रवर्तक की भावना के अनुरूप ही लाभान्वित किया करता है। जिन गुणों या विशेषताओं का प्रवर्तक के जीवन में अभाव है उनका 'भाव' आंदोलन या संस्था में नहीं पाया जा सकता, अतः आगे उसका प्रभाव भी नहीं पड़ता।

जीवन का अंतिम दशक अत्यंत घटना-प्रधान

यूँ तो स्वामी जी की मान्यता थी कि "Life is a short, but keep woking." अर्थात जीवन लघु तो है पर कार्य करते रहने के लिये है। और भी "He who can, does; who cannot, criticizes" जो करने में सक्षम है, वह कर देता है, जो निठल्ला है, आलोचना करता है। स्वामी जी जीवनभर कर्मठता की प्रतिमूर्ति बनकर जीये। लेकिन उनके जीवन का अंतिम दशक तो अत्यंत घटना-प्रधान एवं जोखिम भरे कार्यों से परिपूर्ण रहा। सन् 1916 में आपने संन्यास लिया और मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बने। 'अछूतोद्धार' का राष्ट्रव्यापी कार्य शुरु किया। पहले तो आप काँग्रेस में शामिल हुये लेकिन कांग्रेस के दोगलेपन और मुस्लिम तुष्टिकरण के चलते वे इस पार्टी से अलग हो गये। उन्होंने 'शुद्धि' का बिगुल बजाया। वास्तव में उनका यह 'शुद्धि चक्र' योगेश्वर कृष्ण के 'सुदर्शन चक्र' के समान ही था, जिससे विधर्मियों के होश उड़ गये। आगरा, मथुरा, अलवर अंचल के 5 लाख मलकाने राजपूत पुनः शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में वापिस आ गये। कितने ही ईसाई एवं मुस्लिम परिवार शुद्ध होकर हिन्दू धर्म अपनाने लगे। महर्षि दयानंद का जो आदेश था कि अन्दर आने के दरवाजे खोल दो और निकलने वाले दरवाजों को बंद कर दो। इस आदेश को अक्षरशः क्रियान्वित किया पहले तो शहीदे-आजम पं. लेखराम आर्य मुसाफिर ने और फिर इसको निर्भीकता से लागू किया स्वामी श्रद्धानंद ने। जब मुसलमानों के पक्ष में बालते हुये गाँधी जी ने स्वामी जी से कहा कि 'शुद्धि' अभियान बंद कर दीजिये क्योंकि इससे मुसलमानों की भावना को ठेस पहुँचती है तो स्वामी जी ने तपाक से उत्तर दिया था कि 'तबलीग' बंद करवा दीजिये, 'शुद्धि आंदोलन' हम बंद कर देंगे। लेकिन इतिहास साक्षी है कि गांधी जी की नसीहत केवल हिंदुओं के लिये ही थी, मुसलमानों के लिये नहीं। स्वामी श्रद्धानंद का मानना था कि हिन्दुओं को संगठित एवं सशक्त बनाये बगैर हिन्दू-मुस्लिम एकता कभी संभव नहीं क्योंकि, मैत्री या मेल-मिलाप समान में ही होता है, असमान में नहीं। इतिहास का यह कटु सत्य है कि गांधी जी की तुष्टिकरण की नीति जिन्नाह के माध्यम से देश के विभाजन का एक प्रमुख कारण बनी। यदि देश स्वामी श्रद्धानंद और सावरकर जैसे क्रांतिकारी शुद्धिसमर्थकों की बात मान लेता तो विभाजन की त्रासदी और महनाश की विभीषिका नहीं झेलनी पड़ती।

चाँदनी चौक दिल्ली में स्वामी की सिंहगर्जना

सन् 1919 का साल भारतीय राजनीति में बड़ी भारी उथल-पुथल का साल था। प्रथम विश्वयुद्ध में विजयी होते ही अंग्रेज अपने सारे कौल-करार भूल गया और दमनकारी नीतियाँ अपनाकर भारतीय प्रजा का दमन करने पर उतर आया। रोलट एक्ट लगा दिया गया। इसके विरोध का ज्वार भी उफन पड़ा। दिल्ली में ऐसे ही एक विरोध-जलूस को नेतृत्व मार्च 30, 1919 में स्वामी श्रद्धानंद जी कर रहे थे। लोगों की अपार भीड़ स्वामी जी के पीछे-पीछे चल रही थी। जब जलूस चाँदनी चौक के पास पहुँचा तो अंग्रेज उच्च्व अधिकारियों ने इसको आगे बढ़ने से रोक दिया था तथा लाठी, गोली का भय दिखाकर लोगों को तितर-बितर करने का प्रयास किया। उस वक्त यह गेरुए वस्त्रधारी वीर संन्यासी सधे हुए कदमों से आगे बढ़ा और सिंहगर्जना करते हुए अपना सीना संगीनों के आगे उड़ाते हुए गरजकर बोला- 'यदि तुम्हारी बंदूक में कोई गोली है तो वह इस निहत्थी जनता पर नहीं, हिम्मत है तो मेरी छाती पर चलाओ।' चारों ओर सन्नाटा छा गया, सबको भय था कि पता नहीं अगले ही क्षण क्या घटित होगा। किंतु संन्यासी की गर्जना ने ब्रिटिश सरकार को कँपा दिया, भयभीत हुकूमत की संगीनें झुक गईं और जुलूस शांतिपूर्वक आगे बढ़ गया।

जामा मस्जिद की मिम्बर पर वेदमंत्र बोलकर व्याख्यान

उक्त घटना ने रातों-रात स्वामी जी को न केवल यशकीर्ति के शिखर पर आसीन कर दिया प्रत्युत हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक एवं द्वितीय जननायक भी बना दिया। परिणाम यह हुआ कि खासकर राजधानी दिल्ली में ऐसा कोई आयोजन नहीं हुआ, जिसमें स्वामी जी को न बुलाया गया हो। स्वामी जी के मुख से निकला 'हम' शब्द हिन्दू-मुस्लिम एकता का वाचक बन गया था, क्योंकि लोग 'ह' का मतलब हिन्दू और 'म' का मतलब मुसलमान समझते थे। 4 अप्रैल, 1919 में दिल्ली में स्थित जामा मस्जिद में मुसलमान भाइयों ने एक सभा आयोजित की जिसमें स्वामी जी को विशेष रूप से बुलाया गया। उनसे अनुरोध किया कि वे तकरीर (भाषण) करें और छूट दी गई कि वेद के मंत्र या 'गीता' के श्लोक जो बोलना चाहें बोलें, हम स्वामी जी को सुनना चाहते हैं। उस समय के जन-जन के हृदय के बेताज बादशाह, हर दिल अजीज स्वामी श्रद्धानंद ने 'त्वं हि नः पिता वसो, त्वं माता शतक्रतो बभूविथ। अधा ते सुम्नमीमहे।' यह वेदमंत्र बोलकर अपना व्याख्यान प्रारंभ किया था। वे लगभग आधा-पौना घंटा बोले, श्रोताओं ने मंत्रमुग्ध होकर उन्हें सुना। इस्लाम और जामा मस्जिद के इतिहास में यह अपने ढंग की पहली और अंतिम घटना है जब किसी गैर मुस्लिम और खासकर हिन्दू ने अपने धर्मशास्त्र के मंत्र/श्लोकादि का उच्चारण जामा मस्जिद के प्रांगण में किया हो और जिसे

तकरीर (भाषण) करने का मौका दिया गया हो।

सन् 1919 भारत के राजनैतिक इतिहास में सर्वाधिक घटनापूर्ण साल रहा है। उसी साल वैशाखी के दिन जलियाँवाला बाग अमृतसर में जनरल डायर ने हजारों निहत्थे, निर्दोष स्त्री-पुरुष, वृद्ध, युवा एवं बच्चों को बड़ी बेरहमी से अपनी गोलियों का शिकार बनाया था। उस जघन्य कांड को देखकर निर्लज्ज पाशविकता की गर्दन भी शर्म से झुक गई थी। अंग्रेजों के तथाकथित न्याय और कानून के प्रति सम्मान की कलई खुलकर घिनौनी असलियत सामने आ गई थी। उस साल का कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में होना था किन्तु इस नृशंस कांड के कारण बड़े-बड़े नेताओं की पिण्डलियाँ काँप रही थीं, हिम्मत नहीं हो रही थी कि अधिवेशन अमृतसर में करने का जोशिम उठाया जाये। सब दबी जुबान से अमृतसर की बजाय कहीं और यह अधिवेशन कराना चाहते थे। स्वामी श्रद्धानंद जी उस वक्त तक काँग्रेस में ही थे। उन्होंने निडरतापूर्वक कहा कि अधिवेशन अमृतसर में ही होगा क्योंकि स्थान बदलने का अर्थ कायरता समझा जायेगा। सभी ने 'हाँ' तो कर दी किंतु सारी जिम्मेवारी स्वामी जी पर ही डाल दी गई। स्वामी श्रद्धानंद जी को स्वागताध्यक्ष बनाया गया। तप, त्याग और रात-दिन के प्रयासों के परिणामस्वरूप यह सफलतम अधिवेशन साबित हुआ और अधिवेशन की सारी कार्यवाही पहली बार हिन्दी में सम्पन्न हुई। लेकिन राजनैतिक पार्टियाँ प्रायः चापलूसों और कागजी नेताओं की गिरफ्त में रहती हैं और मुँहजबानी जमा खर्च करने वाले ही सारा श्रेय लूट ले जाते हैं। स्वामी श्रद्धानंद जैसे स्वाभिमानी एवं कद्दावर नेता को इसलिये भुला दिया जाता है कि उनकी उपस्थिति में इन कागजी नेताओं का कद दूरबीन से ही नजर आ सकता है, वैसे नहीं।

जामे शहादत- स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, जन्म पर आधारित जातिप्रथा का विरोध, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी, शुद्धि कार्य आदि कार्यक्रम हाथ में लेकर स्वामी जी आगे बढ़ते ही चले गये, कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। कार्याधिक्य एवं बढ़ती आयु का स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ने लगा, लेकिन स्वामी जी ने कभी परवाह नहीं की ओर न कभी आराम किया। उन्हें एक ही चिंता सता रही थी कि यदि समय रहते कारगर कदम नहीं उठाये गये तो हिन्दू ममाज का दलित उपेक्षित वर्ग विधर्मियों के चंगुल में चला आयेगा और देश भारी मुसीबत में फँस जायेगा। उन्होंने शुद्धिचक्र की रफ्तार और तेज कर दी। विधर्मी बौखला गये। जब असगरी बेगम नामक एक मुस्लिम महिला को शुद्ध करके आशादेवी बनाया गया तो मतांध मुसलमानों का गुस्सा और भड़क उठा। उन्होंने अब्दुल रशीद नामक एक जुनूनी मुस्लिम युवक को स्वामी जी की हत्या करने का काम सौंपा। हत्यारा अब्दुल रशीद कपड़ों में पिस्तौल छुपाये 23 दिसंबर, सन् 1926 के दिन विचार-विमर्श करने का बहाना बनाकर स्वामी जी के पास पहुँचा और मौका पाकर स्वामी जी पर गोलियाँ दाग दीं। हत्यारे को पकड़ तो लिया गया किन्तु तब तक वह अपना काम पूरा कर चुका था। अमरता के पथ पर मतवाला पथिक शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया, किन्तु वह अग्रिरूप भव्य आकृति इतिहास के पन्नों पर अमरता की ऐसी अमिट छाप छोड़ गई जिसे समय की निर्मम शक्ति कभी मिटा नहीं सकेगी न उनकी चमक को फीका कर सकेगी। 'यावच्चंद्रदिवाकरौ.......' वे इतिहास के पन्नों पर बने रहेंगे। उन धीर, वीर, अमर बलिदानी, धर्मसेनानी, महान् शिक्षाविद्, स्वतंत्रता संग्राम के महानायक, शुद्धि आंदोलन के सूत्रधार, देश, धर्म, जाति के रखवाले अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद को कोटिशःनमन।

-साभार : आर्य वीर

रामप्रसाद बिस्मिल

बलिदान की पुण्य परम्परा में क्रान्तिकारी शिरोमणि रामप्रसाद बिस्मिल का राष्ट्र के लिए अभूतपूर्व योगदान है। पौष कृष्ण 11 सम्वत् 1984 अर्थात् 19 दिसम्बर सन् 1927 सोमवार को प्रातः साढे छः बजे पं. रामप्रसाद बिस्मिल भारत की स्वतन्त्रता हेतु वन्दे मातरम् के जयघोष एवं वेद मन्त्रोच्चारण के साथ फाँसी के तख्ते पर चढ़कर फंदे को वरण कर शहीद हो गये। आपकी शहादत का ऋण समस्त भारतीय नर-नारियों पर (विशेष कर आर्यसमाजियों पर) सदैव रहेगा। धन्य है वो माँ जिसकी कोख से ऐसा वीर क्रान्तियुग पुरुष उत्पन्न हुआ।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का त्रैवार्षिक चुनाव दिनांक 09.11.2013 के अनुसार नई कार्यकारिणी

संरक्षक

1. श्री चन्द्रभान चौधरी जी
   मो. 8377926129
2. श्री अशोक सहगल जी
   मो. 9811455506
3. श्री ओमप्रकाश अग्रवाल जी
   दूरभाष: 25943339, 23921754
4. श्रीमती ललिता निझावन जी
   मो. 9811889355
5. श्री विजय गुप्त जी (आसु कवि)
   दूरभाष: 29958924, 26056587
6. श्री जगदीश गांधी जी
7. श्री जे. एन. शर्मा जी
   मो. 9810788097

प्रधान

8. श्री रामनाथ सहगल जी
   मो. 9810769411

कार्यकारी प्रधान

9. श्री हरबंशलाल कोहली जी
   दूरभाष: 24101067

उप-प्रधान

10. डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया जी
    मो. 9718479970
11. श्री गोविन्द लाल जी
    मो. 9811623552
12. श्री रणबीर सिंह जी
    दूरभाष: 25896520, मो. 9818281981
13. श्री सत्यप्रकाश आर्य जी
    मो. 9871414790
14. श्रीमती आदर्श सहगल जी
    मो. 9266101941

महामन्त्री

15. श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी
    मो. 9873354458

मन्त्री

16. श्री चतर सिंह नागर जी
    मो. 9211501545
17. श्री बलदेव राज जी
    मो. 9312220135
18. श्रीमती सावित्री शर्मा जी
    दूरभाष: 43306580
19. श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी
    मो. 9968264375

कोषाध्यक्ष

20. श्री सुरेन्द्र गुप्त जी
    मो. 9968634685
21. श्री ओमवीर सिंह जी
    मो. 9868803585

प्रतिष्ठित सदस्य

22. प्रो. रामविचार जी
    मो. 09728865589
23. श्री विजय कुमार बत्रा जी
    दूरभाष : 26864324
24. श्री गुरुदत्त तिवारी जी
25. श्री शिवकुमार मदान जी
26. श्री अशोक सहदेव जी
27. श्री दर्शन अग्निहोत्री
    मो. 9810033799

अन्तरंग सदस्य

28. श्री सुरेश चुघ जी
    मो. 9811167514
29. श्री अजय सहगल जी
30. श्री सूर्यपाल सिंह जी
    मो. 9999176667
31. श्री वी.के. गुप्ता जी
    दूरभाष: 26101479, 26185586
32. श्री पूरन सिंह डबास जी
    मो. 9818211771
33. श्री भीमसेन कामरा जी
    मो. 9212715554
34. कै. प्रेम कुमार वलेचा जी
    दूरभाष: 22755144
35. श्री दीप नारायण मिश्रा जी
36. श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी
    मो. 9810254630
37. श्री नाहर सिंह वर्मा जी
    मो. 9868892410
38. श्री धर्मवीर पंवार जी
    मो. 9873068674
39. श्री कर्ण सिंह तंवर
40. श्री अमरनाथ गोगिया जी
41. श्री स्वदेश पाल गुप्ता
    मो. 9718599990
42. श्री जगदीश राज मल्होत्रा
    मो. 9013013802
43. श्री कीर्ति शर्मा जी
44. श्री राजेश मेंदीरत्ता जी
    मो. 9899248258
45. श्री जतीन्द्र डाबर जी
    मो. 9811802338
46. श्री भुवनेश कुमार गौड़
47. श्रीमती सन्तोष वधवा
48. श्री जगदीश नाथ भाटिया
49. श्री सुरेन्द्र शास्त्री
50. डॉ. जे.एस. वालियान
    दूरभाष: 25833969
51. श्रीमती जगदीश वधवा जी
52. डॉ. ब्रजपाल सिंह संत जी
    मो. 9313074694
53. श्री रामचन्द्र कपूर जी
    मो. 9560355038
54. श्री प्रकाशवीर शास्त्री
55. श्री के.एल. राणा जी
56. श्री वेद प्रकाश विरमानी जी
    मो. 9873758302

विशेष आमन्त्रित

1. श्री रविन्द्र कुमार मेहता जी
   दूरभाष: 22152435
2. श्री दर्शन दयाल शर्मा जी
   मो. 9212288565
3. श्री इन्द्रदेव गुलाटी जी
   मो. 08958778443
4. श्री रवि गुप्त जी
   मो. 9871000741
5. श्री अशोक कुमार सरदाना जी
   मो. 9811026250
6. श्री राम सिंह शर्मा जी
7. श्री हरीचन्द आर्य
   मो. 9250068807
8. श्री देवराज अरोड़ा जी
   मो. 9810702763
9. श्री योगेश कुमार आर्य जी
   मो. 7838153378
10. श्री योगेश्वर चन्द्र आर्य जी
11. श्री योगेन्द्र शास्त्री जी

सम्पादकीय तब होवे प्रण पूर्ण हमारा

डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

जिनकी बलिदानी खुशबू से
महक रहा है राष्ट्र चमन।
भारत माता के वीर शहीदों को
करते हैं शत-शत नमन।।

'बलि' शब्द संस्कृत में अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है जैसे कि- आहुति, भेंट, चढ़ावा, समर्पण, पूजा, आराधना, नैवेद्य, शुल्क, उच्छिष्ट इत्यादि। बलिदान का प्रचलित अर्थ है समाज, राष्ट्र, धर्म की रक्षा के लिए अपने जीवन को भी लगा देना। बलिदान के बिना कभी भी किसी की भी स्थिति सुख शान्ति और उन्नति नहीं हो सकती, यही आदि सृष्टि से लेकर अब तक का अटल सिद्धान्त है। मनुष्य का जीवन बलिदान के लिए है विषय भोगों के लिए नहीं। बीज 'स्व' का बलिदान करता है तभी तो वृक्ष बनता है। वृक्ष अपना बलिदान करता है तभी तो मनुष्यों को शीतलता तथा पुष्प, फल आदि मिलते हैं। सूर्य, चन्द्रमा, नदी, पहाड़, धरती, अग्नि, जल, वायु ये सभी बलिदानी हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र एवं योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र ने धर्म के लिए, नीति के लिए, मर्यादा के लिए, आर्य संस्कृति एवं सभ्यता के लिए बलिदान किया तभी तो आज भी यह राष्ट्र अपने आध्यात्मिक स्वरूप से खड़ा है। बड़े-बड़े महाराजाओं से लेकर हकीकतराय, फतेह सिंह, जोरावर सिंह जैसे कोमल पुष्प भी बलिदान के जीवन्त उदाहरण हैं। स्वामी दयानन्द ने वेदों के लिए अपना जीवन बलिदान किया। वीर सावरकर, भगत सिंह, रामप्रसाद विस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, नेता जी सुभाष, मदन लाल ढ़ींगरा जैसे भारत माता के सुपुत्रों के बलिदान से ही हम आजाद हुए। पद्मिनी, लक्ष्मी बाई, जीजाबाई, गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा, अनुसूया, मदालसा जैसी नारियों की बदौलत ही आज भी देशभक्ति जीवित है।

बलिदान का मूल परोपकार और स्वाभिमान की भावना है। बलिदान मनुष्य की अस्मिता है। वह मानवता की पहचान है। यदि किसी व्यक्ति में बलिदान की भावना नहीं है, तो वह मनुष्यता के विपरीत आचरण कर सकता है। इस धरती पर वर्तमान काल में छः अरब से भी अधिक मनुष्य निवास कर रहे हैं, तो क्या वास्तव में वे मनुष्य हैं?यद्यपि शक्ल, सूरत से सभी मनुष्य लगते हैं, परन्तु गुण धर्म की दृष्टि से देखा जाये अधिकांश लोग पशुवत् जीवन यापन कर रहे हैं। शास्त्र ऐसे लोगों को मानव कोटि में नहीं रखता। किसी पुरुष में महानता के गुण नहीं हों तो उसे महात्मा नहीं कहा जाता, किसी सरोवर में जल नहीं हो तो उसे जलाशय नहीं कहा जाता है।

इसी प्रकार मनुष्य में यदि समर्पण नहीं है, बलिदान नहीं है, तो वह शास्त्र के शब्दों में मनुष्य नहीं। अर्थ एवं काम में आसक्त, भोग विलासों में रत, संस्कार विहीन, मानवता से रिक्त हृदय वाले व्यक्ति न तो अपने परिवार के लिए, न समाज व राष्ट्र के लिए, न ही धर्म के लिए बलिदान कर सकते हैं। जिस प्रकार तालाब का जल पड़े-पड़े सड़ जाता है किन्तु वही जल जब नदी में प्रवाहित होता है तो स्वच्छ पवित्र बन जाता है। ठीक इसी प्रकार बलिदान की परम्परा चलती रहती है, तो समाज व राष्ट्र स्वच्छ एवं पवित्र रहते हैं।

जहां शस्त्र बल नहीं शास्त्र बल रोते या पछताते हैं ऋषियों को भी सिद्धि तप से तभी मिलती है जब पहरे पर स्वयं धनुर्धर राम खड़े होते हैं।

देश हित बलिदान करना राम, कृष्ण की पूजा है। बलिदानी होना ऋषि दयानन्द जैसे ऋषियों का सम्मान है, सत्कार है। हिन्दुत्व की रक्षा करना, वैदिक धर्म संस्कृति की रक्षा करना बलिदानियों का ही परम धर्म है। राष्ट्र धर्म से बढ़कर कुछ भी नहीं है। निर्बल न अपना कुछ कर सकता है न दूसरे का।

क्या करेगा प्यार वो इन्सान से
क्या करेगा प्यार वो हिन्दुस्तान से।
जो माँ की गोद में जन्म लेकर
माँ की रक्षा न कर पाया बलिदान से।।

ध्यान रखना! तप, त्याग और वीरता को जन्म देने वाला भारत, संसार को प्रेम और शान्ति का सन्देश देने वाला भारत, शिवा-प्रताप का भारत, तुलसी-सुर का सखा भारत, अर्जुन भीम का भक्त भारत, तिलक-शास्त्री का उज्ज्वल भारत, आजाद- विस्मिल-भगतसिंह का अनुपम भारत, सुभाष-व रानी लक्ष्मी बाई का ओजस्वी भारत, दयानन्द-श्रद्धानन्द का तेजस्वी भारत, विवेकानन्द-रामतीर्थ का यशस्वी भारत आज फिर बलिदान मांग रहा है। आजादी हमें मिली है, उन वीरों बलिदानियों के हम ऋणी हैं। परन्तु आजादी देवी को रिझाना भी सरल नहीं, असिधारा व्रततुल्य है। बलिदान के बिना विराट् व्योम में स्वतन्त्र आहवान की गुंजाइश नहीं। बलिदान किसी भी राष्ट्र की महाविभूति होती है। बलिदान जीवन का अन्त नहीं, यह तो जीवन ज्योति को जगाने वाली महौषधि है। के बिना विराट् व्योम में स्वतन्त्र आहवान की गुंजाइश नहीं। बलिदान किसी भी राष्ट्र की महाविभूति होती है। बलिदान जीवन का अन्त नहीं, यह तो जीवन ज्योति को जगाने वाली महौषधि है।

जीना मरना लगा दुनियाँ में
मरना सभी को आता नहीं।
देश हित में जो मरा,
बलिदान व्यर्थ जाता नहीं।
दर्द की सीमा होती है,
अधिक सहा जाता नहीं।
वह राष्ट्र गूंगा है,
जो गीत शहीदों का गाता नहीं।

जो भी राष्ट्र अपने पूर्वजों को स्मरण नहीं करता अथवा नाम तो लेता है किन्तु काम विपरीत करता है वह राष्ट्र ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रहता। केवल माला अपने से कुछ नहीं होगा, माला के साथ हाथ में भाला भी हो, तभी जाकर माला अपना सार्थक है। इतनी बड़ी बलिदान की परम्परा के बावजूद अगर हिन्दु जनमानस अपने ऊपर संस्कृति-सभ्यता तथा राष्ट्र पर छाये संकट के प्रति जागरुक नहीं होता तो यही कहा जा सकता है-

वतन की फिक्र कर नादां,
मुसीबत आने वाली है।
तेरी बर्बादियों के मश्वरे हैं,
आसमानों में,
न समझोगे तो मिट जाओगे,
ए हिन्दोस्तां वालों।
तुम्हारी दासता तक भी
न होगी दास्तानों में।

जो होता बलिदान है!

–गोपालसिंह नैपाली

कहने को सम्राट् बड़ा है, और सुखी धनवान् है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

पाकर जन्म यहाँ जो रहता, दो दिन तिनके जोड़कर,
आज नहीं तो कल चल देगा, दुनियाँ से मुख मोड़कर।
भेंट चढ़ा दे जो तन-मन की, सच्चा उसका ज्ञान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।1।।

इस जग में हर चंचल मानव, अपना ही घर भरता है,
जीता है अपनों की खातिर, अपनों पर ही मरता है।
जो औरों के लिये उजड़ता, जग में उसका मान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।2।।

श्रद्धा है वरदान भक्ति का, सुन्दर त्याग तपस्या है,
अपनी धुन पर मरमिट जाना, सबसे कठिन समस्या है।
यही समस्या जो हल करले, उसका ही जय-गान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।3।।

मरने की धुन वह मस्ती है, जो ताजों को ठोकर दे,
घनी-अँधेरी रातों को भी, जो झिलमिल पूनम करदे।
नस-नस में है आग लगी, तो होठों पर मुस्कान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।4।।

जिसको सुख प्यारा है जग में, वे करते हैं, प्रार्थना,
जो चाहें ऐश्वर्य करें वे, मन्दिर-मन्दिर अर्चना।
किन्तु शहीदों को मरना ही, धर्म-भजन है, ध्यान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।5।।

जो चाहे, मैं बनू पुजारी, वह पूजे भगवान को,
जो चाहे कि बन संन्यासी, छोड़े सकल जहान को।
जो चाहे, शंकर बन जाऊं, वह करता विष-पान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।6।।

एक हुए ऋषि दयानन्द जो, हँसते-हँसते मर गये,
अपना जीवन-दीप बुझा कर, दिव्य दिवाली कर गये।
उनका प्यार बना स्वतन्त्रता, का पावन अभियान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है ।।7।।

दिया भरा प्याला विष का तो, पगली मीरा पी गई,
मर मिट गये पिलाने वाले, वह मर कर भी जी गई।
आज उसी के रंग से होती, भक्तों की पहचान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।8।।

भक्त रिझाते रहे राम को, लेकर धन की झोलियाँ,
गाँधी हुए 'राम' को प्यारे, खा सीने पर गोलियां।
उनके यश की अमर पताका, जग में हिन्दुस्तान है,
सबसे बड़ा वही जग में, जो होता बलिदान है।।9।।

पुण्य सताया जाये जगत में, पाप सताता जायेगा,
पर बलिदान सदा दुनियाँ को, राह बताता जायेगा।
यहाँ शहीद समय का ज्ञानी, पापी जग नादान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।।10।।

अमर बलिदानीः अशफाक उल्ला खाँ

-विश्वम्भर देव शास्त्री
शिक्षक नगर, देवबन्द सहारनपुर

अपना परिचय देती है वीरों की अपनी कृतियां,
जीवन मार्ग रक्षाने आती है, दिव्याकृतियां।।
तंग आकर जालिमों के जुल्म और बेदाद से।
चल दिये सूए अदम जिन्दाने फैजाबाद से।।

स्वाभिमानी देशभक्त यह घोषणा करने वाला वीर सात करोड़ भारत के मुसलमानों में पहला मुसलमान था, जो भारत माता की आजादी के लिये फांसी पर झूला।

जन्म 1900 में शाहजहाँपुर में अंग्रेजों की नौकरी करने वाले मुस्लिम परिवार में जन्म हुआ। मिशन स्कूल में पढ़ते समय इनके कई मित्र बन गये। क्रान्तिकारियों की वीर कथायें पढ़ते, देशभक्ति पूर्ण कवितायें पढ़ते, अंग्रेजी शासन से अत्याचारों से परिचित होते और अंग्रेजी शासन के शत्रु बन गये। उन घटनाओं का प्रभाव इन पर अधिक हुआ, जो 1905-1906 में बंग भंग जिसके भय से अंग्रेजों ने दिल्ली में राजधानी बदली। 1912 में शोभा यात्रा के समय हार्डिंग पर बम फेंका गया। 1915 में गदर पार्टी का लाहौर में क्रान्ति, 1919 में जलियांवाला नरसंहार, इन अत्याचारों में इन छात्रों में इस अत्याचारी शासन को समाप्त करने का प्रण कर लिया।

1920 में तिलक जी ने गांधी जी को कांग्रेस की बागडोर सौंप दी। गांधी जी ने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की सहायता, इसलिये की थी कि युद्ध के पश्चात् ये भारत को स्वतंत्र कर देंगे। किन्तु अंग्रेजों ने विश्वासघात किया, और रोलेक्ट ऐक्ट थोप दिया। इतना तो किया कि जो राजनैतिक कैदी थे, उनको मुक्त कर दिया। ऐक्ट का विरोध सारे देश में हुआ। गांधी जी ने क्रान्तिकारियों से परामर्श कर अपना असहयोग आंदोलन प्रारम्भ कर दिया और चोराचोरी की घटना के कारण बीच में बन्द कर दिया। इस असफलता के कारण पुराने क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल ने क्रान्तिकारियों का संगठन बना लिया। इसमें 40 से अधिक क्रान्तिकारी युवक एकत्रित हो गये। क्रान्ति हेतु अस्त्र शस्त्रों की आवश्यकता पूर्ति के लिये प्रथम काकोरी काण्ड को प्रारम्भ कर दिया। युवक इसकी प्रतीक्षा कर ही रहे थे कि कब हमें अवसर मिले। राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खां छात्र अवस्था में घनिष्टता हो गई थी। दोनों में भेद न था, एक प्राण दो शरीर बन गये थे। अलग अलग मजहब भी इनकी मित्रता में बाधक न बन सका। अशफाक पूर्ण रूप से राममय बन गया था।

1. एक बार यह बीमार हो, राम राम जपने लगा। सबको आश्चर्य हुआ कि यह मुसलमान होते हुये राम का नाम क्यों ले रहा है। तब एक साथी ने कहा यह तो अपने साथी रामप्रसाद को याद कर रहा है। बिस्मिल को आर्यसमाज से बुलाया गया, मित्र ने जैसे ही उसके सिर पर हाथ रखा उसने आँखें खोल लीं।

2. शाहजहाँपुर आर्य समाज में दोनों क्रान्ति की योजना बनाया करते थे। कुछ कट्टरवादी मुसलमान नहीं चाहते थे कि अशफाक उसके साथ रहे अतः कुछ हाथों में लाठी-बंदूक लेकर आर्य समाज को घेर लिया। इसको जब इस बात का पता चला तो अपनी पिस्तौल हाथ में लेकर आंदोलनकारियों को ललकारा और गर्जा यदि किसी ने आर्य समाज की एक भी ईट पर हाथ लगाया तो उसकी कीमत होगी एक मुसलमान। इस ललकार को सुनकर सब लौट गये।

काकोरी स्टेशन की योजना के लिये नेता बिस्मिल ने सबकी बैठक बुलाई। निश्चय किया कि 9 अगस्त 1925 को काकोरी स्टेशन पर 7 बजे सायंकाल सहारनपुर जाने वाली रेल का खजाना लूटा जाये। उस दिन मात्र 10 ही सदस्य आये थे। बिस्मिल ने सबको काम बांट दिया।

शचीन्द्रनाथ बख्शी के साथ अशफाक उल्ला खां और लाहिड़ी तो द्वितीय श्रेणी की टिकट लेकर बैठे, शेष 7 बिस्मल के साथ तीसरे डब्बे में बैठ गये। काकोरी से कुछ आगे गाड़ी चली तो बख्शी ने जंजीर खींच कर गाड़ी रोक दी। सभी क्रान्तिकारी नीचे उतरे। यात्रियों को सावधान किया, कोई बाहर न निकले। सब गार्ड के डिब्बे में चढ़ गये। बख्शी ने गार्ड को अपने अधीन कर लिया। लोहे की तिजौरी को तोड़ने में अशफाक ने पूरा बल लगाया। जो धन मिला उससे पिस्तौले छुड़ाई गई।

इस घटना के पश्चात् क्रान्तिकारियों की पकड़ प्रारम्भ हो गई। अशफाक सबसे पीछे तब पकड़ में आया जब 2 हजार रुपये के लालच में इनके धोकेबाज एक साथी मुहम्मद हबीब ने भेद देकर पकड़वा दिया। लखनऊ ले जाते हुये मजिस्ट्रेट सेनुद्दीन ने इस देशदुलारे को धमकाया, समझाया तथा सरकारी गवाह बनाने का लालच भी दिया। मजहवी हथकण्डा चलाया कि तुम्हारा मित्र बिस्मिल आर्य समाजी है। हिन्दू अपना राज्य चाहते हैं। वह बहुत चालबाज और मक्कार है। इतनी बात सुनकर सच्चा मित्र उत्तेजित होकर बोला- "मैं अपने राम की बुराई नहीं सुन सकता। हिन्दू राज भी होगा तो अपना ही राज होगा" स्वाभिमानी शब्दों में कहा इस अभियोग में मैं अकेला मुसलमान हूँ। मेरे लिये यह गौरव की बात होगी कि एक मुसलमान देश की आजादी के लिये फांसी पर झूलने वाला हुआ। मुझे बदनामी का खौफ जरूर है मरने का नहीं।

जब दोनों मित्र जेल में एक साथ थे- तब अशफाक की माता जी इनसे मिलने गई। बाते करते हुंये मां से बिस्मिल ने कहा - "माँ ! जब भाई का लड़का होगा तो उसका नाम भी यादयार के लिये अशफाक ही रखना। माता जी ने अपने दूसरे बेटे के पुत्र का नाम अशफाक रखा। गुरुकुल कांगड़ी के शताब्दी समारोह में उसका सम्मान किया गया। दोनों साथी कवि थे लेखक थे-
आने वाले युवकों को संदेश -

"भारत माता की आजादी के लिये हमने अपना कर्तव्य पूरा किया। हमने जैसा भी काम किया, वह भारत की आजादी के लिये ही किया। हमारे इन कामों की कोई प्रशंसा और कोई निन्दा भी करेगा। परन्तु हम क्रान्तिकारियों की वीरता और साहस की प्रशंसा शत्रु भी करेगा। हमारा उद्देश्य किसी निर्दोष को मारना नहीं रहा। हम तो क्रान्तिकारी वीरों की भाँति शूली पर चढ़ना चाहते हैं। गुलामी में जकड़े जजों ने हमें निर्दयी, क्रूर, मानव कलंक भी कहा, किन्तु हम पूछते हैं इन जजों से कि क्या जलियां वाले बाग में निरीह भारतीय स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़ों पर गोलियां नहीं चलाई गई थी। कितने जजों ने उस अत्याचारी डायर को उपरोक्त नामों से पुकारा। तो क्या यह मजाक हमारे साथ ही क्यों?

भारतीय भाइयो! आप परस्पर विरोध छोड़ कर, देशहित में एक हो कर देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने में लग जायें। भारत स्वतन्त्र हो, सब भाई प्रेम करें। सबको ये सलाम।।
"मरते बिस्मिल रोशन-अशफाक अत्याचार से, होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से।।"

उनका ऋण हम चुकाते रहेंगे

- पल्लवी, रामनगर (लोनी रोड़) शाहदरा दिल्ली

शहीदों की बलिदानी गाथा, चाँद-सूरज सुनाते रहेंगे।
जिन्होंने हमको आजाद कराया, उनका ऋण हम चुकाते रहेंगे।
'भूखे-प्यासे' रहे छोड़ वैभव, रखवाले हमारे बने थे,
इन्कलाबी महुरत मना कर, जोश सबका बढ़ाते रहेंगे।।1।।

'काकोरी पर्व' मसीहा, नाम अशफाक उल्ला खाँ जानो,
असली बेटा था हिन्दुस्तानी, सर उसको झुकाते रहेंगे।।2।।

रोशनसिंह ने रौशन किया देश, अपना वैभव सभी बिसारा,
चरित्र जिसका था उज्ज्वल अनोखा उसको दिल में बसाते रहेंगे।।3।।

रामप्रसाद बिस्मिल की चर्चा, करता इतिहास ना थकता,
उसकी जिन्दादिली की कहानी, हम सबको बताते रहेंगे।।4।।

क्रूर अंग्रेजों की कब्र खोदी, फाँसी फन्दे को चूमा खुशी से,
राजेन्द्र लाहड़ी से सबक ले चलें हम, मंजिल को पाते रहेंगे।।5।।

आर्यवीरों ने खुद्दारी को समझा, गद्दारी के फन को कुचलकर,
दुष्ट जिनको सताते रहेंगे, आर्य उनको बचाते रहेंगे।।6।।

पल्लवी बनना स्वाभिमानी, ये जीवन की सुन्दर हैं घड़ियाँ,
शुद्धि सभा का आर्य समाजी, मिलके यश गुनगुनाते रहेंगे।।7।।

अमर शहीद मदनलाल ढ़ींगरा

-टी.डी.चान्दना

38/2, नगर कान्ति कालोनी, आगरा

अमर शहीद मदनलाल ढ़ींगरा मूल रूप से अमृतसर निवासी थे। उनका जन्म 18 सितम्बर 1887 को एक संभ्रात एवं शिक्षित परिवार में हुआ। इनके पिता ब्रिटिश सरकार में चिकित्सा विभाग में उच्च पद पर आसीन थे। मदनलाल प्रारम्भ से ही स्वच्छन्द विचारों के धनी थे। पारिवारिक इच्छा की पूर्ति हेतु उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए लन्दन गये।

परन्तु लन्दन में अंग्रेजों द्वारा हिन्दुस्तानियों के साथ तिरस्कार एवं अपमान-जनक व्यवहार को देखकर दुःखी हुए। लन्दन प्रवास के दौरान वह वीर सावरकर, श्यामजी कृष्ण वर्मा एवं मैडम कामा के सम्पर्क में आये। उनकी प्रेरणा से मदनलाल ढ़ीगरा की विचारधारा ही बदल गयी और उनके अन्दर देश के लिए कुछ कर गुजरने की भावना बलवती हो उठी।

उन्होंने हिन्दुस्तानियों के अपमान व तिरस्कार का कारण देश की गुलामी को समझा। अतः वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए स्वयं को बलिदान करने हेतु तत्पर हो गये। एक बिटिश अधिकारी "सर कर्जन वॉयली" इण्डिया हाउस में रह रहे भारतीयों पर निगरानी रख उन्हें दण्डित कराने में तत्पर रहता था। जिसको एक समारोह में उन्होंने गोली मार कर परलोक भेज दिया। इस घटना से सम्पूर्ण ब्रिटिश सत्ता हिल गयी। ब्रिटिश सत्ता को यह लगने लगा कि भारत की स्वतन्त्रता हेतु क्रान्ति की आग अब "भारत की सीमा से निकल कर उनके स्वयं के घर, लन्दन तक आ पहुँची है। मदनलाल ढ़ीगरा को उनके इस कार्य पर दिनांक 17 अगस्त 1909 को फांसी दी गयी। सर आगा खाँ व कुछ अन्य कांग्रेसी नेताओं ने लंदन में एक बैठक कर इस घटना की निन्दा का प्रस्ताव रखा, जिसका सावरकर ने पुरजोर विरोध किया और सभा भंग करा दी। मदनलाल ढ़ीगरा ने अदालत में चले मुकदमे के समय जज के समक्ष कहा - "हिन्दू होने के नाते मेरा विश्वास है कि मेरी मातृभूमि का अपमान करना साक्षात् परमात्मा का अपमान करना है। ऐसा करने वालों को दण्ड देकर मैंने कोई अपराध नहीं किया।" ऐसे महान क्रान्तिवीर को शत् शत् नमन।

स्वतन्त्रता की अर्चना में बालकों के बलिदान

-अंकित शास्त्री, आर्य समाज राजेन्द्र नगर

इतिहास साक्षी है कि मातृभूमि की सम्मान-रक्षा के लिये हँसते-हँसते प्राणोत्सर्ग करने को समुद्यत वीर बालकों ने कितने ही आश्चर्यजनक कार्य किये हैं। स्वतन्त्रता रूपी यज्ञ में न केवल वीरों का महापुरुषों का योगदान रहा है, अपितु छोटे-छोटे बालकों का बलिदान एवं समर्पण सबसे ज्यादा अनुकरणीय रहा है, जिसमें से प्रमुख नाम इस प्रकार हैं-

1. नाना साहब की पुत्री कुमारी मैना (13 वर्ष), रमेश दत्त मालवीय इलाहाबाद (13 वर्ष), दत्तू रंगारी कर्नाटक, (13 वर्ष) हरिगोपाल बल, बंगलादेश (13 वर्ष) अनेह कर्नाटक (14 वर्ष), सोमाभाई पांचाल, गुजरात (15 वर्ष), लक्ष्मण जोशी महाराष्ट्र (16 वर्ष), बालाजी रायपुरकर, महाराष्ट्र (16 वर्ष), शंकर महाले महाराष्ट्र (18 वर्ष), अनन्त कन्हेरे, महाराष्ट्र (19 वर्ष), कमलाकर दांडेकर महाराष्ट्र (18 वर्ष), विनोद किनारीवाला, गुजरात (18 वर्ष), दत्तात्रेय जोशी महाराष्ट्र (18 वर्ष), मिदनापुर के चार बलिदानी - निर्मल जीवन घोष (17 वर्ष), बृजकिशोर चक्रवर्ती (18 वर्ष), अनाथ बंधु पंजा (19 वर्ष), प्रद्योत भट्टाचार्य (20 वर्ष), नीरेन्द्रनाबदास गुप्त बंगलादेश (19 वर्ष), वसुदेव हरि चापेकर महाराष्ट्र (19 वर्ष), रोशन लाल मेहरा पंजाब (20 वर्ष), बादल गुप्ता बंगलादेश (18 वर्ष), हेमू कालाणी पाक (19 वर्ष), करतार सिंह सराबा पंजाब (19 वर्ष), रामकृष्ण विश्वास बंगलादेश (20 वर्ष), रामेश्वर बनर्जी बंगलादेश (20 वर्ष), गुरुदास राम पंजाब (20 वर्ष), उदयचन्द जैन मध्यप्रदेश (19 वर्ष), सीताराम सूरी आन्ध्रप्रदेश (18 वर्ष), कन्ठाईलाल दत्त बंगाल (20 वर्ष), पद्मधर सिंह लाल मध्यप्रदेश (20 वर्ष), जीवन घोषाल बंगलादेश (17 वर्ष), नारायण दाभाडे महाराष्ट्र (16 वर्ष), खुदीराम बोस बंगाल (17 वर्ष)

इन वीर बालकों के बलिदान हम कभी भुला नहीं सकते इसी प्रकार स्वतन्त्रता के लिए न जाने कितने बालक जन्मभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हो गए, वे अमर हैं वे धन्य हैं-

तोड़ दिये निज बालिदानों से पराधीनता के चिर बन्धन।
स्वत्व लुटाकर दूर किया था कोटि-कोटि जनता का कुन्दन।।
माँ को देख पड़ी कारा में होता जिनके हिप स्पन्दन।
उन्हीं यशस्वी रणवीरों के चरणों में है शत-शत वन्दन।।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

-सेवाराम आर्य
आर्य समाज नजफगढ़,
नई दिल्ली

गुजरात के करमसद गाँव में जन्मा वल्लभभाई पटेल,
माता थी लाड़बाई उनकी और पिता झबेर भाई पटेल।
सबसे बड़े भाई सोभा भाई और उनसे छोटे नरसिंह भाई,
फिर विट्ठल भाई, चारों भाइयों में सबसे छोटे थे वल्लभ भाई।

मैट्रिक के बाद इंगलैण्ड में रहकर की उन्होंने वकालत पास,
अट्ठारह वर्ष की आयु में झबेरबा मिली अर्द्धांगिनी खास।
मणिबेन थी उनकी पुत्री और डाया भाई हुए उनके पुत्र,
चौंतीस वर्ष के थे वल्लभ भाई पटेल, जब हुए विधुर।।

देश सेवा का बीड़ा उठाया, राजनीति में कदम बढ़ाया,
महात्मा गांधी का मिला संग, कांग्रेस को अपनाया।
गुजरात से किया संघर्ष शुरू, अंग्रेजों के खिलाफ,
राष्ट्र की राजनीति में किया प्रवेश, दास्ता के खिलाफ।।

देश को आजाद कराने के लिये जेल यातना सहनी पड़ी,
असहयोग आंदोलन किये, वकालत भी छोड़नी पड़ी।
कई बार बने कांग्रेस अध्यक्ष, राजनीति में मान पाया,
अंग्रेजों की दमनकारी नीति से नहीं वह घबराया।।

हिंसा के था विरोध में, सुभाष क्रान्ति को न अपनाया,
अहिंसा से ली आजादी, अंग्रेजों को यहाँ से भगाया।
रियासतों को मिला भारत में अनूठा काम कर दिखाया,
नेहरू की ढुलमुल नीति ने कश्मीर मामला उलझाया।।

सरदार पटेल धीर था, वीर था और सच्चा देशभक्त था,
वाणी में जोश था, रगों में उसकी वह रहा पूर्वजों का रक्त था।
दुर्भाग्य है देश का, उसे प्रथम प्रधान मंत्री नहीं बनाया,
गृहमंत्री होते हुए भी उसने भारत को विशाल बनाया।।

पन्द्रह दिसम्बर सन् उन्नीस सौ पचास की अशुभ घड़ी,
सरदार पटेल चल बसा, देश पर आई मुसीबत बड़ी।
इतिहास में नाम अमर हो गया, भारत भाल ऊँचा कर गया,
सेवाराम वह पटेल ही था, जो जिन्ना को सबक सिखा गया।।

भूलो मत

उलटी बात को सीधा दिखलाना - बीरबल को याद करो।
सर्वस्व जब करना हो दान - हर्षवर्धन को याद करो।
काँटे को पीस कर हो पीना - चाणक्य को याद करो।
शत्रु विजय पर सम्वत चलाना - विक्रमादित्य को याद करो।
तीन सौ पंडितों से अकेले शात्रार्थ - दयानन्द को याद करो।
झूठे मुकदमों को न लेना - मुंशीराम को याद करो।
स्वराज प्राप्ती लाठियां खाना - लाजपतराय को याद करो।
काश मेरी माता इतनी सुंदर होती - शिवाजी को याद करो।
घास पत्तों की रोटी खाए - राणा प्रताप को याद करो।
देश हित सन्यास को त्यागे - बंदा बैरागी को याद करो।
पिता पुत्रों का बलिदान - गुरु गोबिन्द महान को याद करो।
सत्य का महत्त्व जानना - सत्यार्थ प्रकाश को याद करो।
आतंकवाद को करना समाप्त - राम बाण को याद करो।
सारे संसार का करना उपकार - आर्य समाज को याद करो।
शाकाहार जो अच्छा लागे - साग बिदर का याद करो।
थोड़ा झूठ बोलना चाहिये - धर्म पुत्र युद्धिष्ठर को याद करो।
पुत्र मोह में सब कुछ जाइज़ - धृतराष्ट्र को याद करो।
कोई काम न बन पाए - लुमड़ी के खट्टे अंगूर याद करो
2. कोई कार्य प्रारम्भ हो करना - तो ओ३म् का जाप करो।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - शुद्धि आंदोलन को याद करो।
जब बुद्धि श्रेष्ठ मार्ग पर लगानी - गायत्री मंत्र का जाप करो।
निष्काम कर्म क्या होता है- गीता ज्ञान का जाप करो।
3. जामा मस्जिद में वेद पाठ- श्रद्धानन्द को भूलो मत।
शुद्धि हिन्दू जाति का जीवन है- मदनमोहन मालवीय को भूलो मत।
मेरे बाद शुद्धि का कार्य बन्द न होने पाए - श्रद्धानन्द वचन को भूलो मत।
हम का अर्थ बताने वाला- उस के बलिदान को भूलो मत।

-हरबंस लाल कोहली

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता, प्रखर राष्ट्रवादी, सूक्ष्मदर्शी, कुशल संगठनकर्ता और ओजस्वी वक्ता नेताजी सुभाषचंद्र बोस आधुनिक भारत के महापुरुषों में अग्रगण्य हैं। नेताजी ने भारत की आजादी के लिए कठिन संघर्ष किया। उन्होंने ही 'जयहिंद' का नारा दिया, जिसे पूरे देश ने स्वीकार किया। देश के बाहर जाकर उन्होंने आज़ाद हिंद सेना और आजाद हिंद सरकार का गठन किया। दोनों ही सेना के अध्यक्ष के पद पर रहकर दानों का कुशल संचालन किया। आज़ाद हिंद सेना से उन्होंने कहा 'तुम मुझे खून को, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।' उनके इस उत्साहजनक वक्तव्य से प्रेरित होकर उस सेना ने 'दिल्ली चलो' को घोष किया और वर्मा से अपना विजय अभियान शुरू किया। वे ब्रिटिश सेना को रौंदते हुए आसाम तक चले आए। देश में 'भारत छोड़ो आंदोलन' और बाहर से 'आज़ाद हिंद सेना' के प्रहार से अंग्रेजी सरकार हिल गई और भारत को स्वतंत्र करने को बाध्य हो गई। भारत की आजादी के लिए सशस्त्र संघर्ष करने वाले सुभाषचंद्र बोस आज भी भारतीय जनमानस में सादर प्रतिष्ठित हैं। जीवन का एक-एक क्षण मातृभूमि के लिए अर्पित करने वाले नेताजी के विषय में 1936 ई. में अंग्रेज सरकार ने कहा था– "सुभाष बोस जैसा तीक्ष्ण बुद्धि और संगठत क्षमता का व्यक्ति किसी भी राज्य के लिए खतरनाक होगा।"

हिन्दुस्तान की सारी जनता जानती है कि जब सन् 1939 ई. त्रिपुरा कांग्रेस अधिवेश में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए दो प्रत्याशियों के बीच खुला मतदान हुआ। एक तरफ सुभाष बाबू थे और दूसरी तरफ डॉ. पट्टाभिरामय्या, जिनको महात्मा गांधी का वरदहस्त एवं समर्थन प्राप्त था। अध्यक्ष पद के मतदान में सुभाष बाबू निर्वाचित हो गए। महात्मा गांधी ने कहा, 'पट्टाभिरामय्या की हार मेरी हार है।' इसका फल यह हुआ कि मातृभूमि के योग्यतम पुत्र ने स्वाभिमान के साथ कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और अपना अलग संगठन 'फारवर्ड ब्लाक' के नाम से स्थापित किया। इस प्रकार उनके जीवन की सारी घटनाएं प्रेरणाप्रद हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है:

बाधाएं कब बांध सकी हैं, आगे बढ़ने वालों को।
विपदाएं कब रोक सकी हैं, मरकर जीने वालों को।।

18 अगस्त 1945 ई. को फारमोसा के ताइपेह नामक स्थान पर वायुयान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु का समाचार मिला। लेकिन देश की जनता ने इस समाचार पर विश्वास नहीं किया। स्वतंत्र भारत की सरकार ने इस दुर्घटना की सत्यता के लिए आयोग नियुक्त किया। परंतु उसके प्रतिवेदन पर भी जनता ने विश्वास नहीं किया। एक बार तो कुछ लोगों ने घोषणा कर दी कि नेताजी अमुक दिन कानपुर में प्रकट होंगे। लाखों की भीड़ इकट्ठा हुई किन्तु नेताजी नहीं आए। पुनः बिहार के एक साधु को नेताजी कहा गया और लोग उस साधु का दर्शन करने जाने लगे। भीड़ से परेशान होकर वह साधु कहीं लापता हो गया। आज भी जनता का एक वर्ग नेताजी को जीवित मानता है। पुनश्चापि, अब नेताजी के जीवत होने की संभावना अत्यंत क्षीण है। नेताजी आज भी हर भारतीय जनमानस के हृदय में सश्रद्ध बसे हुए हैं। नेताजी निर्भय स्वतंत्रता सेनानी, कर्मयोगी और अभूतप्रिय लोकप्रिय राष्ट्रसंत के रूप में भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। 23 जनवरी का उनका जन्मदिन हमें यही संदेश दे रहा है कि हम भारतीय प्रण करें, व्रत लें कि नेताजी द्वारा दी गई स्वर्णिम आजादी को हम न किसी के पास गिरवीं रखेंगे और न ही रखने देंगे।

संसार नमन करता जिसको , ऐसा कर्मठ युग चेता था।
अपना सुभाष जग का सुभाष, भारत का सच्चा नेता था।

–फरेन्द्र कुमार शास्त्री (बरगढ़)

कौन था वह?

- जिसे डॉ॰ अंबेडकर ने दलितों का सबसे बड़ा मसीहा कहा–
- जिसने मैकाले की शिक्षा नीति का करारा जवाब दिया–
- जिसे महात्मा गांधी अपना बड़ा भाई कहते थे–
- जिसने चांदनी चौक में संगीनों के सामने सीना खोलकर अंग्रेजी पुलिस को गोली चलाने के लिए ललकारा था—
- जिसे जामा मस्जिद में मिम्बर और स्वर्ण मंदिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ—
- जिसने भारत को लोक अदालतों का विचार दिया—
- जिसने भारतीय स्वामित्व में पहला राष्ट्रीय स्तर का दैनिक अखबार प्रकाशित किया—
- जिसने अमृतसर में जलियावाला बाग काण्ड के बाद कांग्रेस का अधिवेशन करवाने की हिम्मत दिखाई—

वह था

महान् बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

- 20 वीं सदी का चमत्कारी एवं प्रेरक व्यक्तित्व
- देश और धर्म पर बलिदानी
- निर्भीक संपादक
- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का संस्थापक
- सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक
- अपने समय का सर्वाधिक लोकप्रिय नेता, दिल्ली का बेताज बादशाह
- शुद्धि अभियान का प्रणेता
- महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी
- लोक कल्याण के लिए अपनी सारी सम्पत्ति दान कर देने वाला सर्वत्यागी संन्यासी सत्य से परे कोई धर्म नहीं।

धर्म की नींव ही सत्य है।

उच्च से उच्च मस्तिष्क संसार के नाश का कारण है,
यदि उसके साथ पवित्र आत्मा सम्मिलित नहीं है।

जो स्वयं भोगी है वे दूसरे को त्याग कैसे सिखलायेंगे?

इसी जन्म भूमि के लिए कष्ट सहना, इसी की सेवा में सारा पुरुषार्थ लगाना और इसी पर सर्वस्व न्यौछावर करना एक-एक भारतवासी अपना धर्म समझ लें।

मैं आप सभी देशवासियों से याचना करूँगा कि अपने हृदयों को मातृभूमि के प्रेम जल से शुद्ध करके प्रतिज्ञा करो कि आज से ये करोड़ों दलित हमारे लिए अछूत नहीं हैं, बल्कि हमारे ही भाई बहन हैं।

मैं स्वयं कमजोर, रोगी और वृद्ध होते हुए भी सारे देश में घूमने जाऊंगा, दलित भाइयों का संगठन करूँगा।

जिस देश और जाति में शिक्षक स्वयं चरित्रवान न हों, उसकी दशा कभी सुधर नहीं सकती।

तुम्हारा ज्ञान निष्फल है, यदि तुम उस पर आचरण नहीं करते।

शुद्धिकरण कीजिए

–आशु कवि विजय गुप्त
मदनगीर, अम्बेडकर नगर, दिल्ली

धर्म को सत्कर्म से उपकार चाहिए, मानवता को विश्व का श्रृंगार चाहिए।
भटकते राहगीर को शरण दीजिए, दलदल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
सिद्धान्त सत्कर्म की राहो पर धूल जब चली, घायल हुई तब विश्वास की हर कली।
धर्म जब खिलौनें जागीर बन गये, छोटे घाव भी गहरी पीर बन गये।।
समाज के अंग-समाज से बदलने लगे, बिजलियों के दर्द से बादल फटने लगे।
पंखुड़ियाँ मसलने के लिए न चरण दीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
डाल से फूल टूटे तो टूटते गये, अपनो से जो रुठे, वो रुठते गये।
घृणा, द्वेष, अन्धकार, के अन्धड़ उड़े, अविश्वास के तब यहां बवंडर उड़।।
हम सोये रह गये घर जलता रहा, युगों तक ये क्रम चलता रहा।
वक्त विश्राम का नहीं, विचार मंथन कीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
घर की दीवारें सभी चरमराने लगीं, ऊँची मंजिले भी डगमगाने लगीं।
देखी दुर्दशा तो, रोया किसी का मन, अब न लूटने दूँगा, अपना चमन।।
राह बना दी, उन्होंने अपने सत्कर्म से, बिछुड़े हुये लौटे, उस अपने धर्म में।
भंवर मे जिनकी नाव, आलम्बन दीजिए, दल दल में जो फंसे उनका शुद्धिकरण कीजिए।।
ले पताका ज्ञान की महापुरुष बढ़े, अपने धर्म मुकुट में है अमूल्य रतन जड़े।
काँच के टूकड़ों पर न मति भ्रमित कीजिए, आर्य-धर्म मार्ग पर जीवन समर्पित कीजिए।।

राष्ट्र भक्त बनो

–डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल

भारतीडे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे। ता नश्चोदयत श्रिये।। (ऋ. 1.188.8)

मैं मातृभूमि, मातृभाषा और मातृ संस्कृति उन तीनों देवियों की आराधना करता हूँ। वे सब हमें ऐश्वर्य की तरफ प्रेरित करें। अर्थात् हम इन तीनों की रक्षा और उन्नति का सब प्रकार से प्रयास करें।

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो भुवः। (ऋ. 5.5.8)

मातृभाषा, मातृ संस्कृति और मातृभूमि ये तीनों देवियाँ हमें कल्याणकारी हों। अर्थात् हम इन तीनों की उन्नति करें। ये तीनों ही किसी राष्ट्र की पहचान हैं।

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। (अथर्व. 12.11)

सात महाशक्तियाँ जो राष्ट्र को धारण करती हैं वे हैं:– राष्ट्रवासियों में सत्यता, दृढ़ अनुशासन, तेजस्विता, संकल्प शक्ति एवं कर्त्तव्य परायणता, तपस्वी वृत्ति, ज्ञान–विज्ञान की विद्वत्ता और कल्याण भावना से प्रेरित परोपकारमयी वृत्ति। हमारे भूत काल और भविष्य काल की रक्षा करनेवाली मातृभूमि हमारे लिए विस्तृत प्रकाश और स्थान दे। अर्थात् राष्ट्र रक्षा के लिये हम उपरोक्त सात गुणों को अपने में विकसित करें और राष्ट्र का विस्तार करें।

हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्यां अहमुत्तरत्वे।
अयमग्निर्दीदायद्दीर्घमेव सजातैरिद्धोऽप्रतिब्रुवद्भिः। (अथर्व. 3.8.3.)

मैं नमन पूर्वक सोम, सविता, और सब आदित्यों को बुलाता हूँ कि वे मुझे ऐसी सहायता दें ताकि में श्रेष्ठतर योग्यता पाऊं। परस्पर विरोध न करने वाले, स्वजातीय लोगों के द्वारा जो यह राष्ट्रीयता की अग्नि प्रदीप्त की गई है, वह हमारे लोगों में बहुत देर तक जलती रहे। अर्थात् हम राष्ट्रीयता की भावना से सदा प्रेरित और ओत–प्रोत रहें।

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिविप्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यताना वयं तुभ्यं बलिहृतःस्याम।। (अथर्व. 12.1.62)

हे मातृभूमि! तुम्हारे में उत्पन्न सब पदार्थ क्षय आदि रोगों से रहित हमें प्राप्त हों। हमारी आयु लम्बी हो। हम ज्ञान–विज्ञान से युक्त हों और हम अपनी मातृभूमि के लिए सब कुछ त्याग व बलिदान देने को तैयार रहें। अर्थात् हम सदैव अपनी मातृभूमि के हित में कार्यरत रहें और उसकी रक्षा के लिए अपने प्राणों तक को बलिदान करने को तैयार रहें।

भूमे मातर्निधेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रियां माधेहि भूत्याम्।। (अथर्व. 12.1.63

हे मातृभूमि! मुझे मंगलकारी बुद्धि से सुप्रतिष्ठित करो। तेरे विषय में प्रतिदिन चिन्ता करने वाले सूक्ष्म विचारकों, दूरदर्शी मनुष्यों और मुझको यश, कीर्ति व ऐश्वर्य से सम्पन्न करो। अर्थात् हम देशवासी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हों क्योंकि राष्ट्रीय भावना ही राष्ट्र की शक्ति है और वही उसका रक्षा कवच भी है।

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।। (अथर्व.12.1.54)

मैं अपनी इस मातृभूमि पर से विरोधी शक्तियों का पराभव करने वाला हूँ प्रशंसनीय कीर्ति वाला हूँ और सब से ओर से विरोधी शक्तियों को नाश करने वाला हूँ। अर्थात् हमें अपने शत्रुओं को जो हमारी भाषा, संस्कृति, धर्म और राष्ट्र को नष्ट करना चाहते हैं, उन्हें नष्ट करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

भद्रमिच्छन्तः ऋषयः स्वर्विदस्तपोदीक्षामुप निषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।। (अथर्व. 19.41.1)

सुख और कल्याण को चाहते हुए स्वर्गीय जीवन वाले ऋषियों ने अपने तप और दीक्षा की शरण ली थी। उसके बाद ही राष्ट्रीय बल और ओज पैदा हुए थे। इसलिए हे देव लोगो! अब इस राष्ट्रीय ओज और बल को पुनः प्राप्त करो और सब मिलकर संगठित होकर राष्ट्रदेव को नमस्कार करो।

रामप्रसाद बिस्मिल

–सेवाराम आर्य
आर्य समाज नजफगढ़, नई दिल्ली

ग्यारह जून अट्ठारह सौ सतानवे को एक क्रांतिकारी का जन्म हुआ,
माँ मूलमती पिता मुरलीधर के घर शाहजहाँपुर में उसका जन्म हुआ।
रामप्रसाद था उसका नाम, बड़ा होकर बिस्मिल नाम से विख्यात हुआ,
बचपन में था अति चचंल व उद्दण्ड, पिता से पिटाई वह खाता था।

पढाई में कम खेलों में रामप्रसाद अधिक रुचि लिया करता था,
सिगरेट पिता, भांग का नशा करता, पिता के पैसे चुराया करता था,
बड़ा हुआ, सुसंगति मिली ऐबों को छोड पढाई में रुचि लेने लगा,
सत्यार्थ प्रकाश से जीवन बदला, आर्य समाज वह जाने लगा।

पिता थे पौराणिक, पुत्र पक्का आर्य, उसने बेटे को घर से निकाल दिया,
मोह ममतावश पुत्र को लाया वापिस, फिर न कभी उसका विरोध किया,
स्वामी सोमदेव के सानिध्य से रामप्रसाद का जीवन ही पलट गया,
भाई परमानन्द की फाँसी से रामप्रसाद पक्का क्रांतिकारी बन गया।

उसने ब्रह्मचर्य का लिया व्रत, अंग्रेजों को भगाने का बीड़ा उठा लिया,
कांग्रेस के गर्म दल के नेता बाल गंगाधर तिलक से प्रभावित हुआ।
मातृवेदी संस्था का शिवाजी समिति में कर विलय, कई एक्शन किये,
धनाभाव के कारण शस्त्रादि खरीदने के लिये डकैती में शामिल हुए।

डकैती को छोड सरकारी कोष को लुटने की योजना बनाई,
क्रांतिकारियों ने रेलगाडी लूट काकौरी काण्ड में सफलता पाई।
साथियों के विश्वासघात से रामप्रसाद की गिरफ्तारी हुई,
जेल में उन्नीस दिसम्बर उन्नीस सौ उत्ताईस को फाँसी हुई।

अशफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी को भी साथ ही फाँसी हुई,
इन क्रांतिकारियों के बलिदान के बीस वर्ष बाद भारत माँ स्वतंत्र हुई।
बिस्मिल ने लिखी क्रांति से भरपूर हिन्दी उर्दू अंग्रेजी में पुस्तकें,
कुछ का अंग्रेजी से हिन्दी में किया अनुवाद, है अति प्रसिद्ध पुस्तकें।

अल्पायु में ही वह शहीद हुआ, अंग्रेजों के छक्के छुड़ा गया,
सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव से क्रांतिकारी दे गया।
बिस्मिल का साथी चन्द्रशेखर आजाद नाम रोशन कर गया,
सेवाराम याद कर बिस्मिल को जो नया इतिहास रच गया।

झाँसी की रानी

सुभद्राकुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।।

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी,

वीर शिवाजी की गाथाएँ, उसको याद ज़बानी थीं।
बुन्देले हरबोलों के मुँह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।।

स्वामी श्रद्धानंद की जीवन झाँकी

23 दिसम्बर 2013 को माता के महान सपूत स्वामी श्रद्धानन्द जी का 88वाँ बलिदान दिवस मनाया जायेगा। 88वर्ष पूर्व भारत माँ के लाडले लाल, हिन्दू समाज के प्रबल संगठनकर्ता एवं महान देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द उपाख्य मुंशीराम का शरीर, मुस्लिम हत्यारे अब्दुल रशीद की गोलियों से छलनी होकर 23 दिसम्बर 1926 को सायंकाल भारत माँ की रक्षार्थ बलिदान हो गया। यह अशुभ दिन भारत के काले इतिहास में सदा अंकित रहेगा। कोई भी स्वाभिमानी इस जघन्य अपराध एवं नृशंस हत्या तथा मुस्लिम समाज के षड्यंत्र को कभी भूल न सकेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म ऐसे समय में हुआ था, जब इस देश के लोग एक ओर अंग्रेजी दासता और अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त थे, तो दूसरी ओर कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों और ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं को बलात् मुसलमान और ईसाई बनाया जा रहा था। हमारे हिन्दू समाज के आचार्य और पंडित उस समय यदि कोई हिन्दू भूलकर भी किसी मुसलमान या ईसाई के घर पानी पी लेता था, अथवा उसकी बहन, बेटियों को बलात मुसलमान बना लेते थे, तो वे पुनः उन्हें हिन्दू समाज में वापिस लेने को तैयार नहीं थे। ठीक ऐसे ही समय पंजाब प्रदेश में जालन्धर के तलवन ग्राम में फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सम्वत् 1913 फरवरी 1856 को लाला नानकचन्द्र जी क्षत्रिय के घर मुंशीराम का जन्म हुआ।

संक्षिप्त जीवन झाँकी

1- सन् 1859 ई. में तीन वर्ष की अवस्था में बरेली नगर की प्राथमिक पाठशाला में शिक्षा प्रारम्भ।

2 - उसी वर्ष अर्थात् सन् 1859 ई. में ही काशी नगरी में उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ।

3 - सन् 1873 ई. में क्वींस कालेज वाराणसी में प्रवेश लिया।

4 - सन् 1877 ई. में जालन्धर के प्रसिद्ध सोंधी परिवार के लाला शालिग्राम की सुपुत्री शिवादेवी के साथ विवाह।

5 - सन् 1884 ई. में सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय के फलस्वरूप आर्यसमाज के सभासद बने।

6 - सन् 1888 ई. में जालन्धर में वकालत आरम्भ की।

7 - सन् 1889 ई. में वैशाखी के दिन सतधर्म प्रचारक उर्दू साप्ताहिक पत्र आरम्भ किया।

8 - सन् 1890 ई. में लाला देवराज से मिलकर कन्या महाविद्यालय की स्थापना की।

9 - सन् 1891 ई. धर्मपत्नी शिवादेवी का निधन हुआ।

10 - सन् 1892 ई. में आर्य प्रतिनिधि पंजाब के प्रधान चुने गये।

11 - सन् 1900 ई. में गुरुकुल की स्थापना के लिये तीस हजार रुपये एकत्रित करने हेतु घर से निकल पड़े।

12 - 1901 ई. में पुत्री अमृतकला की जाति बंधन तोड़कर सुखदेव जी से विवाह कराया।

13 - सन् 1902 ई. में हरिद्वार के निकट काँगड़ी ग्राम गुरुकुल में आरम्भ किया।

14 - सन् 1904 ई. में 'सद्धर्म प्रचारक' साप्ताहिक - पत्र का हिन्दी में प्रकाशन प्रारम्भ किया।

15 - सन् 1909 ई. में 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के प्रधान चुने गये।

16 - सन् 1911 ई. में कुरुक्षेत्र गुरुकुल की विधिवत स्थापना की।

17 - सन् 1913 ई. में भागलपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान चुने गये।

18 - सन् 1917 ई. में मायापुर वाटिका हरिद्वार में संन्यास आश्रम में प्रवेश करके महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने।

19 - सन् 1919 ई. में 30 मार्च को चाँदनी चौक दिल्ली में गोरों की संगीनों के सामने सीना तानकर खड़े होकर सिंह गर्जना की तथा उसी वर्ष 4 अप्रैल को जामा मस्जिद पर ऐतिहासक भाषण दिया।

20 - दिसम्बर 1919 को कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनाये गये।

21 - सन् 1920 ई. में उन्होंने बर्मा की यात्रा करके आर्य समाज का प्रचार किया तथा उसी वर्ष नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में दलितोद्धार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

22 - सन् 1922 ई. में अकाल तख्त साहिब अमृतसर से भाषण देकर गुरु के बाग के मोर्चा में जेल गये।

23 - सन् 1922 ई. में ही स्वामी श्रद्धानन्द अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

24 - सन् 1924 को महात्मा गांधी के आमंत्रण पर बेलगाँव कांग्रेस के अधिवेशन में दर्शक के रूप में भाग लिया।

25 - सन् 1925 ई. में केरल प्रदेश के वायकम में जाति-पाँति, ऊँच-नीच के विरुद्ध सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

26 - सन् 1925 ई. में महर्षि दयानन्द जी की जन्म शताब्दी के विशाल कार्यक्रम का नेतृत्व किया।

27 - 23 दिसम्बर 1926 को एक क्रूर मुस्लिम हत्यारे अब्दुल रशीद की गोलियों से वीरगति पाकर रक्तसाक्षी पंडित लेखराम की पंक्ति में सम्मिलित हो गये।

-केशव प्रसाद शुक्ल (करनैलगंज, गोंडा)

मालवीयजी के जीवन से सम्बन्धित मुख्य तिथियों की सूची

25 दिसम्बर सन् 1861 - प्रयाग में मदन मोहन मालवीय का जन्म

सन् 1878 - कुन्दन देवीजी से मालवीयजी का विवाह

सन् 1884 - कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी.ए. परीक्षा में मालवीयजी उत्तीर्ण

जुलाई सन् 1884 - इलाहाबाद जिला स्कूल में अध्यापक

दिसम्बर सन् 1885 - मध्यभारत हिन्दू समाज के समारोह के आयोजन में मालवीयजी का सक्रिय सहयोग

जुलाई सन् 1887 - कालाकांकर में 'हिन्दुस्थान' पत्र का सम्पादन कार्य प्रारम्भ

सन् 1889 - हिन्दुस्थान पत्र का सम्पादन छोड़कर प्रयाग में वकालत की पढ़ाई प्रारम्भ

दिसम्बर सन् 1893 - मालवीयजी का प्रयाग हाईकोर्ट में वकालत करना

सन् 1902-1903 - मालवीयजी के प्रयास से प्रयाग में हिन्दू बोर्डिंग हाउस का निर्माण

सन् 1903-1912 - प्रान्तीय कौंसिल की सदस्यता-मालवीजयी द्वारा कौंसिल में प्रान्त की महत्त्वपूर्ण सेवा

सन् 1904 - काशीनरेश प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में वाराणसी में मालवीयजी का विश्वविद्यालय की स्थापना पर भाषण

जनवरी सन् 1906 - कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में मालवीय जी द्वारा आयोजित सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन। उदार सनातन धर्म का प्रचार। काशी में भारतीय विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय

सन् 1907 - मालवीयजी के सम्पादकत्व में "अभ्युदय" का प्रकाशन, लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों और उदार हिन्दू धर्म का प्रसार।

अक्तूबर सन् 1910 - हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में मालवीयजी का अध्यक्षीय भाषण

11 अक्तूबर सन् 1911 - काशी विश्वविद्यालय की योजना के सम्बन्ध में मालवीयजी और महाराजा दरभंगा की लार्ड हारडिंग से भेंट, लार्ड हारडिंग का प्रोत्साहन

28 नवम्बर सन् 1911 - हिन्दू यूनिवर्सिटी सोसाइटी का गठन

अक्तूबर सन् 1915 - बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी बिल पारित

फरवरी सन् 1916 - बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी का शिलान्यास

दिसम्बर सन् 1916 - कांग्रेस-लीग सुधार योजना

20 अगस्त सन् 1917 - भावी राजनीतिक लक्ष्य के सम्बन्ध में भारत मंत्री की घोषणा

29-31 अगस्त सन् 1918 - बम्बई में कांग्रेस का विशेष अधिवेश, गरम दल और नरम दल में सहयोग बनाये रखने के लिए मालवीयजी का प्रयत्न

दिसम्बर सन् 1918 - मालवीयजी की अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन

जुलाई-दिसम्बर 1919 - पंजाब में पीड़ित जनता की सहायता

नवम्बर सन् 1919 - मालवीयजी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के उप-कुलपति।

16 सितम्बर सन् 1922 - लाहौर में मालवीयजी का हिन्दू-मुस्लिम सौहार्द पर भाषण

31 दिसम्बर सन् 1922 - मालवीयजी की अध्यक्षता में गया में हिन्दू महासभा का विशेष अधिवेशन

अगस्त सन् 1923 - मालवीयजी की अध्यक्षता में काशी में हिन्दू महासभा का अधिवेशन।

अगस्त सन् 1926 - मालवीयजी और लाजपतराय के नेतृत्व में कांग्रेस इंडिपेंडेंट पार्टी का गठन

नवम्बर सन् 1926 - साइमन कमीशन की नियुक्ति। मालीवीयजी आदि नेताओं द्वारा उसके बहिष्कार की घोषणा।

दिसम्बर सन् 1929 - काशी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में मालवीयजी का दीक्षान्त भाषण।

20 अगस्त सन् 1930 - दिल्ली में मालवीयजी और कांग्रेस वर्किंग कमेटी के अन्य सदस्यों की गिरफ्तारी, छः मास की सजा

अगस्त सन् 1934 - कांग्रेस वर्किंग कमेटी द्वारा निर्णय कि वह साम्प्रदायिक निर्णक को न स्वीकार करती है और न उसे रद्द करती है। मालवीयजी और अणे का विरोध और इस्तीफे

अक्तूबर सन् 1934 - बम्बई में कोंग्रेस का अधिवेशन, साम्प्रदायिक निर्णय के सम्बन्ध में मालवीयजी का संशोधन नामंजूर

फरवरी सन् 1935 - मालवीयजी द्वारा आयोजित दिल्ली में साम्प्रदायिक निर्णय विरोधी कान्फरेन्स

जनवरी सन् 1936 - प्रयाग में मालवीयजी के नेतृत्व में सनातन धर्म महासभा का अधिवेशन, अन्त्यजोद्वार पर प्रस्ताव

सितम्बर 1939 - मालवीयजी का त्यागपत्र और उनके प्रस्ताव पर सर राधाकृष्णन् हिन्दू यूनिवर्सिटी के उपकुलपति

सन् 1941 - गोरक्षा मंडल की स्थापना

12 नवम्बर सन् 1946 - मालवीयजी का निधन

- आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,
आर्य स्त्री समाज, बहावलपुर, राजेन्द्र नगर

हम कौन थे क्या हो गये है और क्या होंगे अभी ?

प्राचीन भारत का इतिहास निःसन्देह गौरवपूर्ण है। ज्ञान-विज्ञान कला, कौशल, सभ्यता, संस्कृति, ऋषि मुनियों की एक लम्बी परम्परा भारत को एवं भारतीयों को निरन्तर श्रेष्ठता की ओर प्रेरित करती रहती है। हमारा प्राचीन इतिहास एवं परम्परा ढर्रा मात्र नहीं है अपितु एक जीवन दर्शन है। परन्तु गुलामी का दंश झेलते-झेलते शायद मानसिकता भी गुलाम रहने की एवं बनने की हो गई है। एक तरफ राष्ट्रीय समस्याएँ तो दूसरी तरफ विदेशी षडयन्त्र। दोनों ही सुरसा राक्षसी की तरह हिन्दू समाज को निगलने के लिए मुँह फैलाये खड़े हैं। विदेशी शक्तियाँ जो कि छल, बल, दल एवं प्रलोभन आदि द्वारा धर्म परिवर्तन रूपी षडयन्त्र का चक्र निरन्तर चला रही हैं। यदि समय रहते हम नहीं जागे तो मिटने के लिए हमारे पास एक मात्र सुदर्शन चक्र- शुद्धि आन्दोलन के प्रणेता स्वामी श्रद्धानन्द ने यह अस्त्र हमें सौंपा है। धर्म परिवर्तन राष्ट्र परिवर्तन है। धर्मान्तरण राष्ट्रान्तरण है। विधर्मियों की संख्या बढ़ने के कारण भारत का विभाजन हुआ एवं पूर्व एवं पश्चिमोत्तर में दो विरोधी राष्ट्र बागलादेश एवं पाकिस्तान बने। आज भी कई जिलों को मुस्लिम जिला बनाने की, नागालैण्ड आदि प्रदेशों को ईसाई प्रदेश बनाने की मांगें उत्पन्न हुई हैं।

ध्यान रहे भारत में जितने भी ईसाई और मुसलमान हैं 99% धर्म से पतित समझे गये हिन्दुओं की सन्तानें हैं। ये अरब या इग्लैण्ड से आये विदेशी नहीं हैं अपितु हमारी गोदी से छीने हुए लाल हैं। मजहब के आधार पर देश का विभाजन हो जाने पर भी हमारे स्वार्थी पदलोलुप, विदेशी संस्कृति में पले-बढ़े नेताओं ने मज़हब और जाति के आधार पर हरिजन ट्राइब (वन्यजाति), आदिवासी और शैडयूल कास्ट आदि नामों से अनेक अल्पसंख्यक वर्ग बना दिये है। आज 'दलित' शब्द हिन्दू विरोधी बन चुका है। अखबारों में, मीडिया में और उछाला जा रहा है। जबकि ये आदि काल से हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हैं। हिन्दू समाज को कमजोर करने एवं बांटने का यह एक सुनियोजित षडयन्त्र है। पुनश्चापि यह समय आत्म निरीक्षण का है। गलती उनकी नहीं है, गलती तो हमारी है। हमारी कमजोरी ही उनकी ताकत है। संसार में वही जाति जीवित रहती है जिसके द्वार सब के लिए खुले रहते हैं। संकीर्णता के कारण जो गलती अतीत में हमसे हुई अब नही होनी चाहिए। हम में से करोड़ों गये पर आया एक भी नहीं। अकबर की हिन्दू बनने की इच्छा को बीरबल हतोत्साहित नहीं करता तो आर्यावर्त की स्थिति कुछ और होती। सभी धर्मो के द्वार खुले हैं। यदि कोई अभागा द्वार है तो वह है हिन्दुओं का, जिसके चौखट पर 'स्वागत' की पट्टी नही लगी है। आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन चलाया। वैदिक धर्म की रक्षा के लिए पं. लेखराम आर्य मुसाफिर विस्तर बांधे-बांधे शुद्धि आन्दोलन करते फिरते थे। स्वामी श्रद्धानन्द एवं महाशय राजपाल जैसे कितने महापुरुष हमसे छीन गये। यदि हम इनके बलिदान को स्मरण कर देश के काम नहीं आ सके तो इनका खून आर्य समाज को, हिन्दू समाज को कभी माफ नहीं करेगा। आर्यो ! यह एक ऋषि ऋण है। इससे उऋण होने के लिए त्याग और बलिदान की जरुरत है। माँ भारती को समर्पण चाहिए। आर्य महा सम्मेलन के इस अवसर पर हम सभी संगच्छध्वं सं वदध्वं की भावना से शुद्धि रूपी सुदर्शन चक्र कर में लेकर पाञ्चजन्य का नाद करें एवं स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों को साकार करें।

-माखनलाल चतुर्वेदी

देश भक्त क्रान्ति पूजक सज्जन अधिक जानकारी के लिए बलिदान विषयक तीन प्रामाणिक पुस्तक अवश्य पढ़ें -

1. स्वतन्त्रता सेनानी सचित्र कोश, लेखक रविचन्द्र गुप्ता, प्रकाशक अनिल प्रकाशन, 2619, न्यू मार्केट, नई सड़क दिल्ली-6
2. देशभक्तों के बलिदान, सम्पादक स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रकाशक हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, रोहतक हरियाणा
3. भारतीय देश भक्तों की कारावास और बलिदान की कहानी, आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक, प्रकाशक सत्यधर्म प्रकाशन, गुरुकुल भैयापुर, लाढौत, रोहतक

गुरुकुल कांगड़ी में तीन दिन

- मुन्शी प्रेमचन्द संस्म./'माधुरी', अप्रैल, 1928 में प्रका.

पिछले आषाढ़ में गुरुकुल कांगड़ी की साहित्य-परिषद् के निमन्त्रण पर मुझे वहां के दर्शनों को अवसर मिला। स्टेशन पर दो ब्रह्मचारियों ने स्वागत किया और तांगे से कनखन आ पहुंचे। गंगा-घाट पर आकर तमेड़े पर बैठे और गंगा पार की। गुरुकुल की पक्की धर्मशाला में पं. पदमसिंह शर्मा के साथ ठहराया गया। ब्रह्मचारियों की सरल-हृदयता और सेवाशीलता देखकर आनन्द आ गया। ऐसे युवक अंग्रेजी कालेजों में बहुत कम हैं। यह विद्यालय किसी ऋषि का आश्रम मालूम होता था।

सन्ध्या समय साहित्य-परिषद् का उत्सव हुअ। ब्रह्मचारियों ने साहित्यिक रचनाएं सुनायीं। यहां धार्मिक संकीर्णता कहीं दिखायी न दी और ब्रह्मचारियों में विचार-स्वातन्त्र विद्यमान था। दूसरे दिन प्रीति-भोज था। सभी ने फर्श पर बैठकर थालियों में भोजन किया। सन्ध्या को कवि-सम्मेलन हुआ। अधिकांश कविताएं हास्यास्पद थीं, मगर ब्रह्मचारियों ने साहस और निस्संकोच से उनका पाठ किया। तीसरे दिन मुख्याधिष्ठाता रामदेव जी के यहां भोजन किया। ब्रह्मचारियों की उन पर असीम श्रद्धा है। वे सरल जीवन और उच्च विचार के आदर्श के प्रतिरूप हैं।

गुरुकुल ने थोड़े ही वर्षों में राष्ट्र के जितने सेवक पैदा किये हैं, उतने किसी और विद्यालय ने नहीं किये। डिग्रियां लेकर सरकारी पद प्राप्त करना राष्ट्रीय सेवा नहीं है। गुरुकुल से निकले स्नातकों के सांसारिक जीवन को देखकर उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में उठी सभी शंकाएं निर्मूल हो गयी हैं। इन स्नातकों को अंग्रेजी-भाषा का भी अच्छा ज्ञान है। यहां की प्राकृतिक शोभा का तो कहना ही क्या। बलवान् चरित्र ऐसी ही जलवायु में विकसित होते हैं।

देवता स्वरूप भाई परमानंद

-इन्द्र देव, सदस्य आर्य समाज चौक बाजार, बलंदशहर
संस्थापक (1) हिन्दू महासभा बुलन्दशहर

भाई परमानन्द क्रान्तिकारी भाई मतिदास-भाईदयाले और भाई सतीदास के पवित्र वंश में उत्पन्न हुए थे जिन्होंने 17वीं शताब्दी में औरंगजेब द्वारा दिए गए भयंकर कष्ट सहते हुए शहीद तो हो गए किन्तु हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। यदि भाई जी को हिन्दुत्व की प्रतिमूर्ति कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। गुणा कर्म स्वभाव के आधार पर आपको देवता स्वरूप की उपाधि दी गई। 1606 में आपने अफ्रीका के कई देशों में जाकर वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का डटकर प्रचार किया।

आपने हिन्दुओं में राष्ट्रीय व धार्मिक भावनाएँ जागृत करने के लिए देश के अनेक नगरों का दौरा किया। उनके ओजस्वी भाषणों ने हिन्दुओं में जागृति उत्पन्न की। उनका औषधि निर्माण का स्थान देशभक्त युवकों का केन्द्र बना रहता था। गुप्तचर पुलिस ने रिपोर्ट दी कि इनके यहां बम बनाए जाते हैं 1615 में आप बन्दी बनाए गए। आपको आजीवन कारावास की सजा देकर अण्डमान भेज दिया गया। वहां इन्हें यातनाएं देते हुए कई कार्य कराए गए।

1607 में पंजाब में हिन्दू महासभा का गठन हुआ। 1615 में भाई परमानन्द ने हरिद्वार अधिवेशन में मदन मोहन मालवीय तथा स्वामी श्रद्धानन्द के साथ अखिल भारत हिन्दू महासभा बनाई। आपके प्रयास से वीर सावरकर 1636-38 के अहमदाबाद अधिवेशन में राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए। वीर सावरकर ने वहीं घोषणाकर दी कि अब अ.भा. हिन्दू महासभा राजनीतिक दल है। भाई परमानन्द नेशनल असेम्बली के सदस्य चुने गए। आपने दिल्ली से साप्ताहिक हिन्दू का सम्पादन कई वर्षा तक किया। आप हिन्दुओं की दुर्दशा पर एकान्त में रोते थे।

आपने अपनी सम्पत्ति बेचकर 1930-40 में मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-110001 में हिन्दू महासभा भवन बनवाया। यहीं अ. भा. हिन्दू महासभा का कार्य किया है। यदि देश विभाजन में आपकी राय मानी जाती तो रावी नदी सीमा रेखा बनती तो लाहोर जैसा अति महत्वपूर्ण नगर भारत में ही रहता।

जब तक नई दिल्ली में हिन्दू महासभा भवन रहेगा।
तब तक देवता स्वरूप भाई परमानंद का नाम रहेगा।।

R.N.I. No. 43084/76 Posting Date : 2-3 Every Month Delhi Postal R.No. DL (N) 060/2012-14

सेवा में,

शुद्धि समाचार

दिसम्बर – 2013

बलिदानियों के बलिदान की तिथि

– डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री
आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

जनवरी

नाम	तिथि
सिद्धेश्वर गोरे	07.01.1931
राजा नाहर सिंह	09.01.1858
जतीन्द्र नाथ	10.01.1915
मास्टर सूर्यसेन दा	11.01.1934
सेवा सिंह	11.01.1915
लाल बहादुर शास्त्री	11.01.1966
बाबूराव विष्णु पराड़कर	12.01.1955
मलप्पा धनशेट्टी	12.01.1931
जगन्नाथ शिन्दे	12.01.1931
किशन शारदा	12.01.1931
तिरुपर कुमार उर्फ कुमार स्वामी	12.01.1931
अब्दुल रसूल कुर्बान हुसैन	12.01.1931
हुकुम चन्द जैन	19.01.1858
शंकर महाले	19.01.1943
खान अब्दुल गफ्फार खां	20.01.1988
हेमू कालाणी	21.01.1943
भोलानाथ चटर्जी	28.01.1916
रामविहारी बोस	21.01.1945
माखनलाल चतुर्वेदी	30.1.1968
अजीमुल्ला खां	जनवरी 1859
गोबिन्द रानाडे	16.01.1901

फरवरी

स्वामी भारतीकृष्ण तीर्थ	02.02.1960
सयाजीराव गायकबाड	06.02.1939
शेर अली	08.02.1872
सोहनलाल पाठक	10.02.1916
अब्दुल जिलानी	10.02.1932
वासुदेव बलवन्त फड़के	10.02.1883
भाई मेवासिंह	11.02.1915
शंभुधन फुंगलो	12.02.1883
सुभद्रा कुमारी चौहान	15.02.1945,
बल्लभ भाई पटेल	15.02.1950
धंडिराज गोविन्द फाल्के	16.02.1944
वासुदेव बलवन्त फड़के	17.02.1883,
रानी गाइडिन्ल्यू	17.02.1993
गोपालकृष्ण गोखले	19.02.1915
विपिन चन्द्रपाल	20.02.1932
रानी चेनम्मा	21.02.1829
सूफी अम्बा प्रसाद	21.02.1915
विनायक दामोदर सावरकर	26.02.1966
चन्द्रशेखर आजाद	27.02.1931
किशन सिंह गड़गज	27.02.1926
वीर सुरेन्द्र साए	28.02.1884
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	28.02.1963

मार्च

गोपीमोहन साहा	01.03.1924
सरोजिनी नायडू	02.03.1949
लाला हरदयाल	03.03.1939
गोविन्द बल्लभपन्त	07.03.1961
भाई जीवन सिंह	25.03.1915
बलवन्त सिंह	18.03.1917
भगत सिंह	23.03.1931
राजगुरु	23.03.1931
सुखदेव	23.03.1931
रहमत अली	25.03.1915
हनुमान प्रसाद पोद्दार	22.03.1971
गणेश शंकर विद्यार्थी	25.03.1931
भाई जगत सिंह	25.03.1915
डॉ. मथुरा सिंह	27.03.1917
श्याम जी कृष्ण वर्मा	31.03.1930
अम्बिका प्रसाद बाजपेयी	21.03.1968
विष्णुशास्त्री चिपणूकर	17.03.1882

अप्रैल

सागरमल गोपा	03.04.1946
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन	04.04.1987
कु. जयवती संघवी	06.04.1943
झल्लुरी सीताराम राजू	06.04.1924
बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्यायें	08.04.1894
मंगल पाण्डे	08.04.1857
खुशीराम	12.04.1919
जलियाँवाला हत्याकाण्ड	13.04.1919
दत्तात्रय भाऊ कोटाले	16.04.1930
तात्या टोपे	18.04.1858
दामोदर हरि चाफेकर	18.4.1899
नारायण राव	18.04.1858
अनन्त लक्ष्मण कन्हेरे	19.04.1940
विनायक देश पाण्डेय	19.04.1940
कृष्ण गोपाल कर्वे	19.04.1940
हरिगोपाल बाल तेग्रा	22.4.1930
वीर कुंवर सिंह	23.04.1858
नरेश रे	22.04.1930
प्रभास बाल	22.04.1930
अमरेन्द्र नन्दी	22.04.1930
अधंतू दत्तीगर	22.04.1930
विश्वम्भर दयाल	22.04.1931
रामचन्द्र भारद्वाज	23.04.1918
राजा महेन्द्रप्रताप	29.04.1979
प्रफुल्ल चाकी	30.04.1908
रमण महर्षि	14.04.1950
रमा बाई	05.04.1922
सर्वपल्ली राधाकृष्णन्	16.04.1975
श्री निवास शास्त्री	17.04.1946

मई

रोशनलाल मेहरा	1.5.1933
ज्वाला प्रसाद	3.5.1860
फतेह अली टीपू	4.5.1799
रतन कुमार सेन	6.5.1930
मनोरंजन सेन	6.5.1930
देवप्रसाद गुप्ता	6.5.1930
मास्टर अमीर चन्द्र	8.5.1915
अवध बिहारी	8.5.1915
भाई बालमुकुन्द	8.5.1915
प्रताप सिंह बारहट	7.5.1917
वसुदेव हरि चाफेकर	8.5.1899
पं. सुन्दर लाल	8.5.1981
महादेव विनायक रानाडे	10.5.1899
बालकृष्ण हरि चाफेकर	12.5.1899
वसन्त कुमार विश्वास	11.5.1934
वैकुण्ठ लाल शुक्ल	14.5.1934
महावीर सिंह	17.5.1933
ज्योतिर्मय मित्र	18.5.1932
पाण्डुरंग वामन काणे	18.5.1972
विजय सिंह पथिक	20.5.1950
चम्पकरमण पिल्ले	23.5.1934
रामरखा	27.5.1919
गुरुदासराम अग्रवाल	27.5.1934
भगवती चरण बोहरा	28.5.1930

जून

विरसा मुण्डा हरिकिशन	9.6.1931
राजा भास्करराव	12.6.1858
कुशल कोवँर	14.6.1943
तारिणी प्रसन्न	15.6.1918
चित्तरंजन दास	16.6.1925
नलिनीकान्त बागची	16.6.1918,
गोपाल गणेश आगरकर	17.6.1895
महारानी लक्ष्मी बाई	18.6.1858
मणीन्द्रनाथ वनर्जी	20.6.1934,
श्यामाप्रसाद मुखर्जी	22.6.1953
गुरुदासमाल	24.6.1931
सिद्धू और कान्हू	30.6.1856
दादाभाई नवरोजी	30.6.1917

जुलाई

पुरुषोत्तम दास टण्डन	1.7.1961
रंगी बापू जी गुप्ते	5.7.1857
स्वामी विवेकानन्द	4.7.1907
सुधीर गुप्त	7.7.1931
दिनेश गुप्त	8.7.1931
ऊधम सिंह	31.7.1940
सालवलेकर	31.7.1968
बालकृष्ण भट्ट	20.7.1914
ईश्वर चन्द्र विद्यासागर	29.7.1891

अगस्त

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक	1.8.1920
रामकृष्ण विश्वास	4.8.1931
रवीन्द्रनाथ टैगोर	7.8.1941
जदों नाग	9.8.1931
नारायण दोभाडे	9.8.1942
श्यामलाल गुप्त पार्षद	10.8.1977
विनोद किनारीवाला	10.8.1942
खुदीराम वोस	11.8.1908
जनरल थंगल	13.8.1891
टिकेन्द्र सिंह	13.8.1891
यतीन्द्रनाथ दास	13.8.1929
काशीनाथ पगधरे	14.8.1942
गोविन्द ठाकुर	14.8.1942
जनार्दन मामा	15.8.1947
सीताराम सूरी	15.8.1955
उदयचन्द जैन	16.8.1942
रामकृष्ण परमहंस	16.8.1886
सुभाष चन्द्र बोस	18.8.1945
सुरेन्द्र नाथ बनर्जी	6.8.1925
बाला जी रायपुरकर	16.8.1942
अशोक नन्दी	18.8.1908
सोमाभाई पांचाल	18.8.1942
मैडम भीखाजी कामा	16.8.1936
मदनलाल ढींगरा	17.8.1909
सुधांशु कुमार शर्मा	19.8.1930
दत्तू रंगारी	23.8.1942
नुजोचरण सेन	25.8.1930
रा.गो. भण्डारकर	24.8.1925

सितम्बर

जीवन घोषाल	1.9.1930,
न्यायमूर्ति तेलंग	1.9.1893
भाई वतन सिंह	5.9.1914
भाई भागा सिंह	5.9.1915
अरविन्द घोष	5.12.1950
सन्तोष कु. मिश्र	16.9.1931
जतिन्द्रनाथ मुखर्जी (बाघा जतिन)	10.9.1915
कमलाकर दाण्डेकर	10.9.1942
यतीन्द्र नाथ दास	13.9.1929
राजा शंकर शाह	18.9.1857
राव तुलाराम	19.9.1863
वीरांगना अजीजन (अंजुला)	20.9.1857
प्रीतिलता बद्देदार	24.9.1932
जीवन उर्फ भारवन जोशी	25.9.1930
केशव महादेव जोशी	25.9.1930
राजा उमराव सिंह	26.9.1857
मो. बरकतुल्ला	27.9.1942
राममोहन राय	27.9.1833
प्रमोद रंजन चौधरी	28.9.1926
अनन्त हरिमित्र	28.9.1926
लक्ष्मण जोशी	29.9.1932
मातंगिनी हाजरा	29.9.1942
लाला हरदेव सहाय	30.9.1962
मदन मोहन मालवीय	12.11.1946

अक्तूबर

चन्द्रसिंह गढ़वाली	1.10.1979
जयप्रकाश नारायण	8.10.1978
राममनोहर लोहिया	12.10.1967
चक्रधर बावा	13.10.1992
दुर्गा भाभी	15.10.1999
बहन सत्यवती	21.10.1945,
विट्ठल भाई पटेल	22.10.1933
क्षेमचन्द्र सुमन	23.10.1993
ब्रह्मबांधव उपाध्याय	27.10.1907
स्वामी दयानन्द सरस्वती	30.10.1883
स्वामी रामतीर्थ	17.10.1906

नवम्बर

गुलाब सिंह	5.11.1942
आण्णा साहब किलेस्किर	2.11.1885
बहादुरशाह जफर	7.11.1862
कन्हाईलाल दत्त	10.11.1908
करतार सिंह सराबा	16.11.1905
विष्णु गणेश पिंगले	17.11.1915
हरनाम सिंह	16.11.1915
लाला लाजपतराय	17.11.1928
लाला देशबन्धु गुप्ता	21.11.1951
सत्येन्द्र बसु	21.11.1908
रामेश्वर वनर्जी	21.11.1945
मनोरंजन सेन गुप्ता	22.11.1915,
जगदीश चन्द्र बोस	23.11.1937
वीरेन्द्र नाथ दास गुप्ता	22.11.1915
ज्योतिबाफुले	28.11.1890

दिसम्बर

शालीग्राम शुक्ल	2.12.1930
ज्योतीचन्द्र पाल	4.12.1924,
भीमराव अम्बेडकर	6.12.1956
भाई परमानन्द	8.12.1947,
अरविन्द घोष	5.12.1950
सुधीर गुप्ता उर्फ बादल	8.12.1930
नारायण सिंह सोनाखान	10.12.1857
बन्तासिंह धामियां	12.12.1930
मदन मोहन मालवीय	12.12.1946
बाबू गेनू	12.12.1930
विनय कृष्ण वासु	13.12.1930
लक्ष्मण पावधरे	13.12.1930
सरदार बल्लभ भाई पटेल	15.12.1950
राजेन्द्रनाथ लाहड़ी	17.12.1927
रामप्रसाद विस्मिल	19.12.1927
अशफाक उल्ला खां	19.12.1927
रोशन सिंह	19.12.1927
गेन्दालाल दीक्षित	20.12.1920
स्वामी श्रद्धानन्द	23.12.1926
त्रिलोक सिंह पांगती	26.12.1942
माखनलाल घोषाल	29.12.1920
भाऊगीर गोस्वामी	30.12.1930
जगतराम भारद्वाज	दिसम्बर 1954
मैथिलीशरण गुप्त	12.12.1964
चक्रवर्ती राजगोपालचारी	25.12.1972

(विशेष जानकारी के लिए पढ़े "स्वातन्त्र्ये संस्कृतम्" लेखक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री)

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23847244 से प्रकाशित। सम्पादक : डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री